RNI : CTHIN/25/A3260

जनता के गोठ

जहां खबर नहीं, असर होता है

▪ वर्ष : 01 ▪ अंक : 12 ▪ सितंबर 2026 ▪ मूल्य : 25 रुपए

भाजपा का बदलता चेहरा!

ढाई दशक में पूरी बदल गई कांग्रेस की तस्वीर

iMP24 NEWS

www.imp24news.com

जनता के गोठ

वर्ष : 01
अंक : 12
सितंबर 2026

www.jantakegoth.com

संपादक
शुभम वर्मा

ब्यूरो
अविनाश प्रसाद (बस्तर ब्यूरो) 97701 64499
भुजबल बघेल (बकावन, बस्तर) 62662 59437
रोहित यादव (बलरामपुर) 79748 30818
चंद्रहास वैष्णव (जगदलपुर) 82238 99000
संजू जैन (बेमेतरा) 70008 85784
प्रेम दुर्गम (बीजापुर) 63032 84212
भूपेन्द्र सिंह राठौर (बिलासपुर) 75669 08440
जीतु साहू (धमतरी) 84352 18664
लोकेश्वर सिन्हा (गरियाबंद) 79748 44284
तनवीर आलम (गौरेला पेंड्रा मरवाही) 98930 22154
हेमंत पटेल (जांजगीर चांपा) 99265 12822
जितेंद्र सिंह (जशपुर) 94255 69910
उमेश कुमार यादव (कोरबा) 87706 46952
आकाश श्रीवास्तव (ब्यूरो, कोरबा जिला) 74706 89880
उग्रसेन पाल (मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर) 96914 42556
त्रिलोक कोशले (मुंगेली) 83599 00249
जाहिद अंसारी (सूरजपुर) 62685 23783
आँचल कुमार वर्मा (उतई /पाटन) 78282 48170
संदीप मिश्रा (दुर्ग) 98934 50338
गोवर्धन लाल सिन्हा (राजनांदगांव) 93037 88975
महबुब खान (कवर्धा) 81092 90209

छत्तीसगढ़ मार्केटिंग हेड
तरूण बंछोर 8349838928

ले-आउट
हिति ग्राफिक्स 8827388255

कार्यालय
हाउस नंबर 411, देवनगरी, आदिवासी छात्रावास के सामने, शिवशंकर होटल के पीछे, महादेव घाट, रायपुरा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्रकाशक एवं मुद्रक : शुभम वर्मा द्वारा हाउस नंबर 411, देवनगरी, आदिवासी छात्रावास के सामने, शिवशंकर होटल के पीछे, महादेव घाट, रायपुरा, रायपुर (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं दैनिक भारत भास्कर प्रेस, हाउस नंबर 855, वार्ड नंबर 09, अनंत विहार सड्डू, सारधू, रायपुर से मुद्रित।
संपादक-**शुभम वर्मा** 9300870270, 9425520408, 077143 45242
RNI : CTHIN/25/A3260

अंदर के पन्नों पर

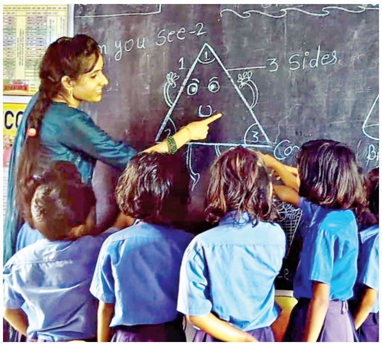

16 प्रमोशन की राह में TET की दीवार

18 शॉर्टेज से उठे सवाल ?

32 स्मृति का बल्ला रिकॉर्ड की रफ्तार

20 कातिल किरायेदार!
22 किताबों में दिखेगा छत्तीसगढ़
28 क्यों जरूरी है आरक्षण पर बहस?
30 दर्द गया, इलाज नहीं

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित। प्रकाशित सामग्री के किसी भी प्रकार के उपयोग के पूर्व प्रकाशक-संपादक की अनुमति अनिवार्य है। पत्रिका में प्रकाशित रचना, लेखों, विज्ञापनों एवं अन्य प्रकाशित सामग्रियों के विचारों से प्रकाशक-संपादक की सहमति हो अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद एवं वैधानिक प्रक्रिया केवल रायपुर न्यायालयीन क्षेत्र के अंतर्गत ही मान्य होगी।

www.jantakegoth.com

जनता के गोठ

जहां खबर नहीं, असर होता है

मासिक पत्रिका

जनता के गोठ

प्रभु श्रीराम कथा में श्रद्धाभाव से शामिल हुए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

IMP24NEWS

www.imp24news.com

IDEAL Marketing & Production

Government Documentary Film

Corporate Film

Presentation Film

Live Telecast Setup

संपादकीय

ढाई दशक में बदली सियासत, बदले चेहरे

छत्तीसगढ़ की 26 साल की राजनीति केवल चुनावी जीत-हार का हिसाब नहीं, बल्कि नेतृत्व के बदलते चेहरों और बदलती राजनीतिक शैली की कहानी भी है। राज्य गठन के बाद कांग्रेस के अजीत जोगी से शुरू हुआ पहला दौर मजबूत व्यक्तिगत नेतृत्व का था। इसके बाद लंबे विपक्षी संघर्ष ने पार्टी को कई क्षेत्रीय नेताओं के सहारे आगे बढ़ाया। 2018 में भूपेश बघेल के नेतृत्व में कांग्रेस की 68 सीटों की ऐतिहासिक जीत ने सत्ता का समीकरण बदल दिया, लेकिन 2023 में 35 सीटों पर सिमटकर पार्टी फिर विपक्ष में पहुंच गई। अब उसके सामने संगठन को मजबूत करने और नए सामाजिक-राजनीतिक समीकरणों के बीच वापसी की चुनौती है। भाजपा की यात्रा भी नेतृत्व परिवर्तन की उतनी ही महत्वपूर्ण कहानी है। 2003 में सत्ता में आने के बाद रमन सिंह लगातार 15 वर्षों तक पार्टी का चेहरा बने रहे। उनके साथ बृजमोहन अग्रवाल, अमर अग्रवाल, अजय चंद्राकर, प्रेमप्रकाश पांडेय, रामविचार नेताम और अन्य वरिष्ठ नेताओं ने सरकार की पहचान गढ़ी। 2018 की करारी हार के बाद 2023 में भाजपा ने 54 सीटों के साथ सत्ता में वापसी की, लेकिन इस बार मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय हैं। रमन सिंह विधानसभा अध्यक्ष हैं, जबकि अरूण साव और विजय शर्मा उपमुख्यमंत्री जैसे नए चेहरे सत्ता के केंद्र में हैं। यही बदलाव छत्तीसगढ़ की राजनीति की सबसे बड़ी तस्वीर है। दोनों दलों में नेतृत्व अब एक चेहरे तक सीमित नहीं रहा। पुरानी पीढ़ी की राजनीतिक विरासत के साथ नई पीढ़ी के चेहरे आगे बढ़ रहे हैं। आने वाले वर्षों में निर्णायक सवाल यही होगा कि कौन-सी पार्टी बदलते नेतृत्व को संगठन, जनविश्वास और नई पीढ़ी की आकांक्षाओं से बेहतर जोड़ पाती है।

भाजपा का बदलता चेहरा!

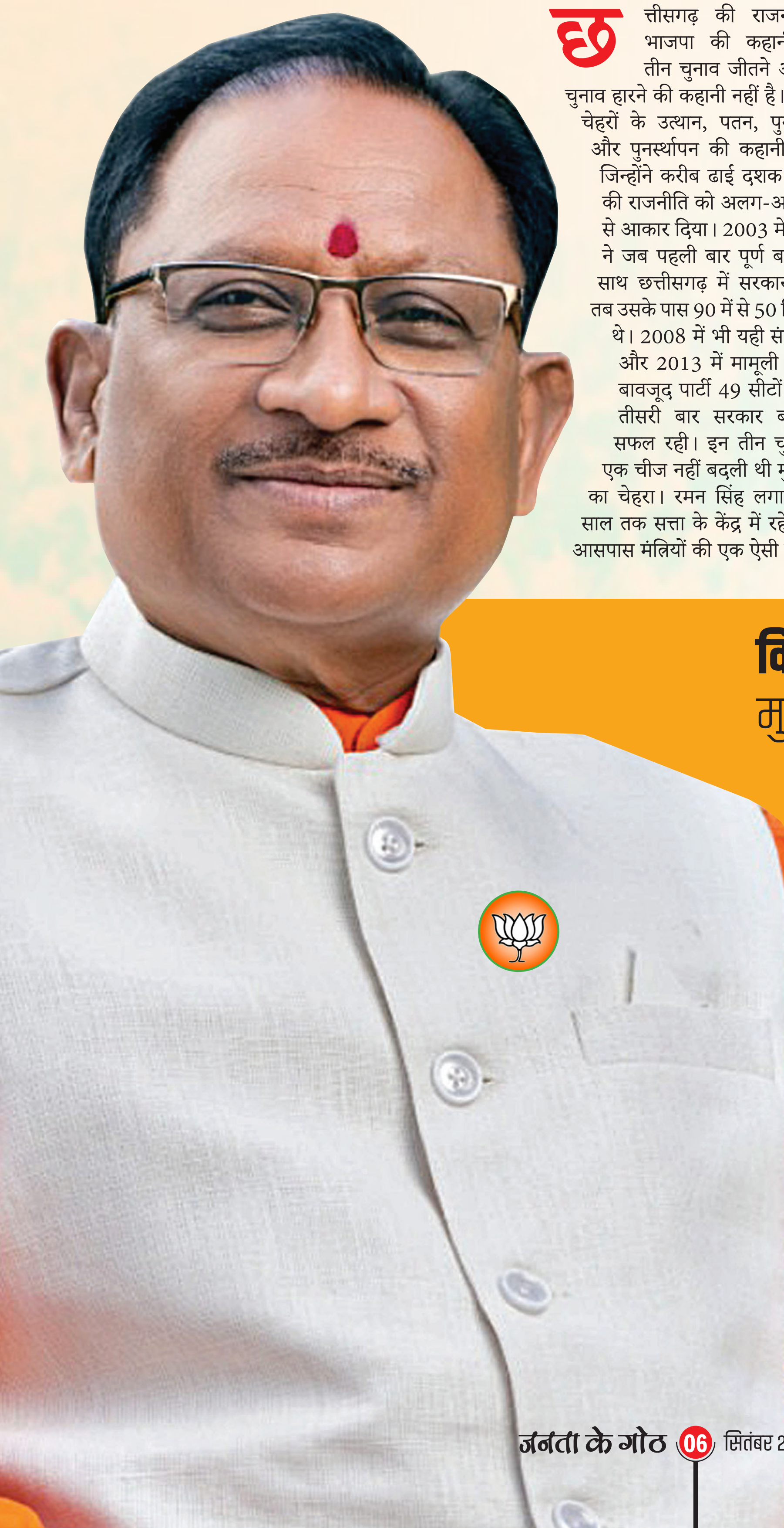

छत्तीसगढ़ की राजनीति में भाजपा की कहानी सिर्फ तीन चुनाव जीतने और एक चुनाव हारने की कहानी नहीं है। यह उन चेहरों के उत्थान, पतन, पुनरागमन और पुनर्स्थापन की कहानी भी है, जिन्होंने करीब ढाई दशक में पार्टी की राजनीति को अलग-अलग ढंग से आकार दिया। 2003 में भाजपा ने जब पहली बार पूर्ण बहुमत के साथ छत्तीसगढ़ में सरकार बनाई, तब उसके पास 90 में से 50 विधायक थे। 2008 में भी यही संख्या रही और 2013 में मामूली कमी के बावजूद पार्टी 49 सीटों के साथ तीसरी बार सरकार बनाने में सफल रही। इन तीन चुनावों में एक चीज नहीं बदली थी मुख्यमंत्री का चेहरा। रमन सिंह लगातार 15 साल तक सत्ता के केंद्र में रहे। उनके आसपास मंत्रियों की एक ऐसी टीम थी, जिसके कई सदस्य अपने-अपने क्षेत्रों में खुद राजनीतिक संस्थान बन चुके थे। लेकिन 2018 में तस्वीर पलट गई। भाजपा 15 सीटों पर सिमट गई और कांग्रेस 68 सीटों के साथ सत्ता में आ गई। पांच साल बाद भाजपा ने जोरदार वापसी की और 54 सीटें जीतकर सरकार बनाई। फर्क सिर्फ इतना था कि इस बार सत्ता का चेहरा रमन सिंह नहीं, विष्णुदेव साय थे। यहीं से भाजपा की छत्तीसगढ़ वाली पुरानी तस्वीर और नई तस्वीर के बीच सबसे बड़ा अंतर दिखाई देता है।

भाजपा का नया चेहरा: पुराने दिग्गज, नई पीढ़ी और कई सत्ता केंद्र

2003 की भाजपा और 2026 की भाजपा को सामने रखिए तो फर्क साफ दिखाई देता है। तब पार्टी का सबसे बड़ा चेहरा रमन सिंह थे। उनके साथ बृजमोहन अग्रवाल, अमर अग्रवाल, अजय चंद्राकर, प्रेमप्रकाश पांडेय, ननकीराम कंवर, रामविचार नेताम, केदार कश्यप और दूसरे मंत्री सरकार की पहचान थे। आज तस्वीर अलग है। रमन सिंह विधानसभा अध्यक्ष हैं। बृजमोहन

विष्णुदेव साय: भाजपा ने बदला मुख्यमंत्री का सामाजिक चेहरा

2023 4में भाजपा ने सबसे बड़ा बदलाव मुख्यमंत्री के चयन में किया। विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री बनाकर पार्टी ने सिर्फ रमन सिंह के बाद नया चेहरा नहीं चुना, बल्कि राज्य की सामाजिक और आदिवासी राजनीति को भी एक स्पष्ट संदेश दिया। साय का राजनीतिक सफर लंबा है। वे कई बार लोकसभा सांसद रहे, केंद्र में राज्यमंत्री रहे और प्रदेश भाजपा की कमान भी अलग-अलग समय में संभाल चुके हैं। 13 दिसंबर 2023 से वे मुख्यमंत्री हैं। यह बदलाव इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भाजपा की 15 साल की सरकार में मुख्यमंत्री का चेहरा एक ही था। सत्ता में वापसी के बाद पार्टी ने उसी पुराने चेहरे को दोहराने के बजाय एक आदिवासी नेता को राज्य की सर्वोच्च कुर्सी पर बैठाया। यह भाजपा की सामाजिक राजनीति में बदलाव का संकेत था।

रमन सिंह के 15 साल से लेकर विष्णु देव साय के दौर तक छत्तीसगढ़ भाजपा में बदल गया सत्ता का पूरा चेहरा

अग्रवाल लोकसभा में हैं। कई पुराने मंत्री विधायक हैं। कुछ सक्रिय सत्ता से बाहर हैं। कुछ निगम या संगठन की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। और दूसरी तरफ विष्णुदेव साय मुख्यमंत्री हैं। अरुण साव और विजय शर्मा उपमुख्यमंत्री हैं। ओपी चौधरी सरकार के नीति निर्माण में महत्वपूर्ण चेहरा हैं। तोखन साहू जैसे नेता केंद्र तक पहुंच चुके हैं। यानी भाजपा ने केवल मुख्यमंत्री नहीं बदला है। उसने सत्ता का पूरा चेहरा बदल दिया है।

23 साल का सबसे बड़ा निष्कर्ष: भाजपा में पद नहीं, भूमिका बदलती है

छत्तीसगढ़ भाजपा की 23 साल की यात्रा को अगर एक वाक्य में समेटना हो तो कहा जा सकता है कि यहां नेताओं की राजनीतिक विदाई से ज्यादा उनकी भूमिकाओं का पुनर्विन्यास हुआ है। किसी मुख्यमंत्री ने विधानसभा अध्यक्ष की भूमिका संभाली। किसी मंत्री ने सांसद बनकर राष्ट्रीय राजनीति का रास्ता पकड़ा। कोई केंद्रीय मंत्री से विधायक बन गया। कोई मंत्री से निगम अध्यक्ष बना। कोई चुनाव हारने के बाद वापस मंत्री बन गया। कोई प्रशासनिक अधिकारी से सरकार के सबसे महत्वपूर्ण चेहरों में शामिल हो गया। यही भाजपा की राजनीति की खासियत भी है और उसकी चुनौती भी। पार्टी के सामने अब सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि उसके पास कितने बड़े नेता हैं। सवाल यह है कि क्या पुराने प्रभावशाली चेहरों और तेजी से उभर रही नई पीढ़ी के बीच ऐसा संतुलन कायम रहेगा, जिससे संगठन में असंतोष भी न बढ़े और सत्ता की दिशा भी स्पष्ट बनी रहे? रमन सिंह का दौर एक चेहरे के इर्द-गिर्द स्थिरता का दौर था। साय का दौर कई चेहरों के बीच संतुलन बनाने का दौर है। 2003 में भाजपा के पास सत्ता का एक स्पष्ट केंद्र था। 2026 में उसके पास कई केंद्र हैं। और यही बदलाव आने वाले वर्षों में छत्तीसगढ़ भाजपा की सबसे बड़ी ताकत भी साबित हो सकता है और सबसे बड़ी राजनीतिक परीक्षा भी।

रमन सिंह: मुख्यमंत्री की कुर्सी गई, लेकिन राजनीतिक केंद्र नहीं

रमन सिंह की राजनीति को सत्ता के पद से मापना उनके पूरे राजनीतिक सफर को छोटा करके देखना होगा। 2003 में मुख्यमंत्री बने रमन सिंह ने लगातार तीन चुनावों में भाजपा का नेतृत्व किया। 2018 की सत्ता हार के बाद भी उन्होंने राजनांदगांव से अपनी विधानसभा सीट कायम रखी और 2023 में भाजपा की सत्ता वापसी के बाद उन्हें विधानसभा अध्यक्ष बनाया गया। इस बदलाव में एक दिलचस्प राजनीतिक संदेश है। मुख्यमंत्री से विधानसभा अध्यक्ष का पद निश्चित रूप से सत्ता के प्रत्यक्ष संचालन की तुलना में अलग भूमिका है, लेकिन रमन सिंह पूरी तरह राजनीतिक परिधि पर नहीं गए। इसके उलट, पार्टी ने उन्हें ऐसी संवैधानिक जिम्मेदारी दी, जिसने उन्हें सत्ता व्यवस्था के भीतर ही बनाए रखा। अर्थात रमन युग समाप्त हुआ, लेकिन रमन की राजनीतिक उपयोगिता समाप्त नहीं हुई। यही भाजपा की नेतृत्व शैली का एक महत्वपूर्ण पहलू है कि पुराने चेहरे को हटाना और पुराने नेता को खत्म कर देना, दोनों एक बात नहीं हैं।

बृजमोहन अग्रवाल

सत्ता के सबसे मजबूत स्तंभ से सांसद तक

रमन सरकार की चर्चा बृजमोहन अग्रवाल के बिना अधूरी रहेगी। लंबे समय तक रायपुर और प्रदेश की राजनीति में उनका प्रभाव इतना मजबूत था

कि वे सिर्फ एक मंत्री नहीं, बल्कि भाजपा की सत्ता संरचना के प्रमुख स्तंभ माने जाते थे। सरकार में लगातार लंबी पारी ने उन्हें संगठन, प्रशासन और चुनावी राजनीति तीनों स्तरों पर मजबूत बनाया। लेकिन 2023 के बाद उनके राजनीतिक सफर ने नया मोड़ लिया। विधानसभा से निकलकर वे लोकसभा पहुंचे और 2024 में रायपुर के सांसद बने। कागज पर देखें तो यह राजनीतिक विस्तार है। राज्य से केंद्र की राजनीति की ओर बढ़ना सामान्यतः पदोन्नति माना जाता है। लेकिन सत्ता के प्रभाव के नजरिए से तस्वीर थोड़ी जटिल है। केंद्र में मंत्री पद न मिलना और राज्य सरकार के साथ अलग-अलग मुद्दों पर उनका मतभेद सार्वजनिक होना बताता है कि पद और राजनीतिक प्रभाव हमेशा एक ही दिशा में नहीं चलते। अपनी ही सरकार को पत्र लिखना, फैसलों पर सवाल उठाना या किसी कार्रवाई के तरीके पर आपत्ति जताना यह संकेत देता है कि कभी सरकार के भीतर निर्णय लेने वाले नेता की भूमिका अब सरकार के बाहर से सवाल करने वाले नेता की भी हो सकती है।

नेताम, केदार और दयालदास

रमन से साय तक इन्होंने अपनी जगह बचाए रखी

अगर रमन सरकार के पुराने मंत्रियों में सबसे स्थिर राजनीतिक ग्राफ खोजा जाए तो रामविचार नेताम, केदार कश्यप और दयालदास बघेल प्रमुख नाम

बनकर सामने आते हैं। इन नेताओं की खासियत सिर्फ यह नहीं कि वे लंबे समय तक राजनीति में रहे। असली बात यह है कि सत्ता बदलने के बावजूद उन्होंने सरकार के भीतर अपनी जगह दोबारा हासिल की। 2018 में भाजपा विपक्ष में गई, लेकिन 2023 में सत्ता में लौटते ही ये चेहरे फिर सरकार का हिस्सा बने। दयालदास बघेल के सफर में बीच का चुनावी अंतराल जरूर आया, लेकिन 2023 में जीतकर मंत्री बनना यह साबित करता है कि राजनीतिक जमीन अगर बची रहे तो सत्ता से बाहर का समय अंतिम अध्याय नहीं होता। इन नेताओं की कहानी पुराने भाजपा मॉडल और नए भाजपा मॉडल के बीच एक सेतु जैसी है।

रामसेवक पैकरा

मंत्री पद गया, राजनीतिक दरवाजा बंद नहीं हुआ

रामसेवक पैकरा इस बदलाव का एक अलग उदाहरण हैं। 2013 में

चुनाव जीतकर रमन सरकार में मंत्री बने और गृह जैसे महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी संभाली। आज वे विधायक नहीं हैं, लेकिन वन विकास निगम के अध्यक्ष हैं। इसका अर्थ यह है कि भाजपा में सत्ता से चुनावी दूरी और संगठनात्मक या सरकारी उपयोगिता के बीच सीधी रेखा नहीं है। मंत्री से निगम अध्यक्ष तक का सफर राजनीतिक प्रभाव के लिहाज से नीचे जरूर है, लेकिन पूरी तरह बाहर हो जाना नहीं है।

प्रेमप्रकाश पांडेय से ननकीराम कंवर तक

सत्ता से बाहर होने की दूसरी कहानी

कुछ चेहरे ऐसे भी हैं जिनका राजनीतिक ग्राफ रमन युग के मुकाबले काफी नीचे चला गया है। प्रेमप्रकाश पांडेय कभी सरकार के महत्वपूर्ण मंत्री थे। एक

चुनावी हार के बाद 2013 में उन्होंने वापसी की और फिर मंत्री बने। लेकिन अब वे विधानसभा की सक्रिय सत्ता संरचना का हिस्सा नहीं हैं। ननकीराम कंवर की कहानी भी इसी उतार-चढ़ाव को दिखाती है। गृह मंत्री जैसे महत्वपूर्ण विभाग को संभालने के बाद वे चुनाव हारे, फिर विधानसभा में लौटे और बाद में दोबारा चुनाव हार गए। चंद्रशेखर साहू और रमशीला साहू की राजनीतिक यात्रा भी बताती है कि मंत्री पद मिल जाना और लंबे समय तक राजनीतिक प्रासंगिकता बनाए रखना दो अलग बातें हैं। सत्ता का दरवाजा एक बार खुलना उपलब्धि है, लेकिन उसे लगातार खुला रखना कहीं अधिक कठिन है।

विक्रम उसेंडी और लता उसेंडी

हार, वापसी और बदली हुई भूमिका

विक्रम उसेंडी का सफर भाजपा के उन नेताओं की कहानी है, जिनके राजनीतिक जीवन में विधानसभा और लोकसभा दोनों की भूमिका रही।

2013 में विधानसभा पहुंचकर मंत्री बने, फिर लोकसभा की राजनीति में गए और बाद में विधानसभा में लौटे। आज वे फिर विधायक हैं। लता उसेंडी की कहानी भी इसी तरह उतार-चढ़ाव वाली है। मंत्री पद तक पहुंचने के बाद चुनावी हार ने उन्हें सत्ता से बाहर किया, लेकिन 2023 में उन्होंने फिर विधानसभा में वापसी की। इन दोनों उदाहरणों से एक बात साफ होती है कि भाजपा में पुराने नेताओं की राजनीतिक उपयोगिता खत्म होने का मतलब हमेशा विदाई नहीं होता। कई बार संगठन उन्हें नई भूमिका या नए चुनावी मैदान में वापस खड़ा करता है।

अमर, चंद्राकर, मूणत और पुन्नूलाल

पुराने दिग्गजों का घटा सत्ता दायरा

रमन सरकार के दौर के कई मंत्री आज भी चुनावी राजनीति में मौजूद हैं, लेकिन उनके पास वह सरकारी शक्ति नहीं है जो कभी उनके पास हुआ करती थी।

अमर अग्रवाल, अजय चंद्राकर, राजेश मूणत और पुन्नूलाल मोहले जैसे नाम इसी श्रेणी में आते हैं। इन नेताओं की राजनीतिक जमीन पूरी तरह खिसकी नहीं है। वे विधायक रहे हैं, चुनाव जीतते रहे हैं और अपने क्षेत्रों में संगठनात्मक पकड़ बनाए हुए हैं। लेकिन मंत्री पद का जाना सिर्फ एक पद का जाना नहीं होता। उसके साथ प्रशासनिक प्रभाव, संसाधनों तक पहुंच और सरकार के फैसलों पर प्रत्यक्ष असर डालने की क्षमता भी बदलती है। इसलिए इन नेताओं का राजनीतिक ग्राफ गिरा जरूर है, लेकिन समाप्त नहीं हुआ। यही अंतर महत्वपूर्ण है। किसी नेता का मंत्री न रहना उसकी राजनीति खत्म होने का प्रमाण नहीं है। राजनीति में कई बार सत्ता से बाहर रहकर भी वापसी की जमीन तैयार की जाती है।

अरुण साव और विजय शर्मा

नई सत्ता के दो अलग स्तंभ

साय सरकार में अरुण साव और विजय शर्मा को उपमुख्यमंत्री बनाना भी भाजपा के बदले हुए नेतृत्व ढांचे को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

अरुण साव का सफर संसद से संगठन और फिर राज्य सरकार के शीर्ष तक पहुंचा। वे प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भी रहे और 2023 में विधानसभा चुनाव जीतने के बाद सरकार में उपमुख्यमंत्री बने। विजय शर्मा का उभार इससे अलग है। संगठन से निकले इस चेहरे ने 2023 में पहली बार विधानसभा चुनाव जीता और उसी सरकार में उपमुख्यमंत्री के साथ महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेदारी संभाली। इसका मतलब साफ है कि अब भाजपा की सत्ता किसी एक पुराने दिग्गज के इर्द-गिर्द नहीं घूमती। नई सरकार में कई शक्ति केंद्र हैं और प्रत्येक की अपनी राजनीतिक पृष्ठभूमि है।

ओपी चौधरी

प्रशासन से राजनीति तक पहुंचा नया मॉडल

ओपी चौधरी भाजपा की नई पीढ़ी का शायद सबसे अलग उदाहरण हैं। एक समय वे प्रशासनिक सेवा में थे। फिर नौकरी

छोड़कर सक्रिय राजनीति में आए। 2018 में चुनाव हारने के बावजूद राजनीति में बने रहे और 2023 में रायगढ़ से जीतकर विधानसभा पहुंचे। इसके बाद वित्त जैसे महत्वपूर्ण विभागों की जिम्मेदारी ने उन्हें सरकार के नीति निर्माण के केंद्र में ला दिया। यह भाजपा की बदलती राजनीति का संकेत है। पहले जहां संगठन के पुराने कार्यकर्ता और लंबे समय से चुनाव लड़ रहे नेता सत्ता के मुख्य चेहरे होते थे, वहीं अब प्रशासनिक अनुभव, तकनीकी समझ और नीति निर्माण की क्षमता वाले नए चेहरे भी तेजी से ऊपर आ रहे हैं।

सरोज पांडेय

प्रदेश से दिल्ली तक पहुंचा कद, फिर ठहराव की स्थिति

छत्तीसगढ़ भाजपा की राजनीति में सरोज पांडेय का सफर भी विशेष महत्व रखता है। महापौर से विधायक, फिर सांसद, राष्ट्रीय

संगठन की जिम्मेदारियां और बड़े राज्यों में प्रभारी की भूमिका, एक दौर में उनका राजनीतिक ग्राफ लगातार ऊपर जाता दिखाई देता था। राष्ट्रीय महासचिव जैसी जिम्मेदारी ने उन्हें प्रदेश की सीमाओं से बाहर स्थापित किया। लेकिन 2024 के लोकसभा चुनाव में कोरबा से हार के बाद उनका संसदीय सफर रुक गया। इसके बाद राष्ट्रीय संगठन में भी उनकी भूमिका पहले जैसी नहीं रही। यह राजनीति के उस कठोर नियम को सामने लाता है जिसमें संगठनात्मक ऊंचाई और चुनावी स्वीकार्यता एक-दूसरे की गारंटी नहीं होतीं।

रेणुका सिंह

मुख्यमंत्री की दावेदारी और फिर विधानसभा

रेणुका सिंह का ग्राफ भी बेहद दिलचस्प है। रमन सरकार में मंत्री रहीं, लोकसभा पहुंचीं और केंद्र में राज्यमंत्री बनीं। इसके बाद 2023 में

विधानसभा चुनाव जीतकर लौटीं और मुख्यमंत्री पद की संभावित दावेदारों में उनका नाम चर्चा में रहा। लेकिन भाजपा ने विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री चुना। इस एक फैसले ने उनके राजनीतिक ग्राफ की दिशा बदल दी। केंद्र की मंत्री से राज्य की विधायक तक का सफर हुआ। लेकिन इसे केवल गिरावट कहना भी सही नहीं होगा। राजनीति में किसी नेता का वास्तविक कद केवल पद से तय नहीं होता। विधानसभा में मजबूत भूमिका, आदिवासी समाज में प्रभाव और संगठन के भीतर उपयोगिता आगे भी उनकी दिशा तय कर सकती है।

तोखन साहू

विधायक से सीधे केंद्र की राजनीति तक छलांग

जहां कुछ पुराने चेहरे नीचे आए, वहीं कुछ नए चेहरे बेहद तेजी से ऊपर पहुंचे। तोखन साहू इसका उदाहरण हैं। विधानसभा की राजनीति से

निकलकर लोकसभा पहुंचे और सांसद बनने के बाद ही केंद्र में राज्यमंत्री की जिम्मेदारी मिलना बताता है कि भाजपा में नई राजनीतिक संभावनाओं के लिए रास्ते खुले हैं। संतोष पांडेय और विजय बघेल जैसे नेताओं का लगातार लोकसभा चुनाव जीतना भी उनके मौजूदा प्रभाव को मजबूत करता है। रूपकुमारी चौधरी का राजनीतिक विस्तार भी उल्लेखनीय है। विधायक से सांसद बनने के बाद उन्हें संगठन में राष्ट्रीय स्तर की जिम्मेदारी मिली। अर्थात भाजपा में केवल पुराने चेहरों का अवसान नहीं हो रहा। उसी समय नई राजनीतिक पीढ़ी भी ऊपर उठ रही है।

नंदकुमार साय और रमेश बैस

राजनीतिक भूमिका का रूपांतरण

नंदकुमार साय कभी भाजपा के सबसे महत्वपूर्ण आदिवासी चेहरों में शामिल थे। सांसद से लेकर राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

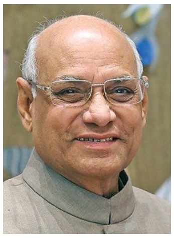

के अध्यक्ष तक पहुंचे। लेकिन भाजपा में वापसी के बाद फिलहाल वे किसी निर्वाचित पद पर नहीं हैं। यह बताता है कि संगठन में लंबे समय तक महत्वपूर्ण रहना और किसी खास समय में सत्ता के केंद्र में होना अलग-अलग बातें हैं। दूसरी ओर रमेश बैस का सफर सामान्य राजनीतिक ग्राफ से अलग है। कई बार सांसद, केंद्रीय मंत्री और फिर अलग-अलग राज्यों के राज्यपाल के रूप में उनकी यात्रा चुनावी राजनीति से आगे निकल चुकी है। इसलिए उनका उदाहरण ऊपर या नीचे जाने के बजाय राजनीतिक भूमिका के रूपांतरण का उदाहरण है।

ढाई दशक में पूरी बदल गई कांग्रेस की तस्वीर

जोगी के केंद्रीकृत दौर से बघेल के उभार तक, अब फिर नेतृत्व की तलाश

सत्ता से शुरुआत, फिर लंबा संघर्ष और 2018 की ऐतिहासिक वापसी

छत्तीसगढ़ के गठन के साथ कांग्रेस को सत्ता तो विरासत में मिली, लेकिन अगले 25 वर्षों में पार्टी का राजनीतिक चरित्र कई बार बदला। एक दौर ऐसा था जब कांग्रेस का मतलब अजीत जोगी और उनके इर्द-गिर्द खड़ा सत्ता तंत्र था। फिर वही पार्टी 15 वर्षों तक भाजपा के सामने विपक्ष में संघर्ष करती रही। इस दौरान उसके भीतर कई क्षेत्रीय क्षत्रप उभरे, संगठन में नेतृत्व बदला और अंततः भूपेश बघेल के नेतृत्व में 2018 में कांग्रेस ने ऐसी वापसी की, जिसने प्रदेश की राजनीति का संतुलन ही बदल दिया। लेकिन 2018 की प्रचंड जीत के पांच वर्ष बाद 2023 में कांग्रेस फिर सत्ता से बाहर हो गई। 68 सीटों की ऐतिहासिक जीत से 35 सीटों तक का सफर केवल चुनावी हार की कहानी नहीं है। यह कांग्रेस के भीतर नेतृत्व, संगठन, गुटीय संतुलन और सत्ता के साथ उसके रिश्ते में आए बदलाव की कहानी भी है। छत्तीसगढ़ बनने के समय विधानसभा में कांग्रेस के 48 विधायक थे और भाजपा के 36। बसपा के तीन, दो निर्दलीय और गोंडवाना गणतंत्र पार्टी का एक विधायक था। यही संख्या कांग्रेस को नई राज्य व्यवस्था में सरकार बनाने की स्थिति में ले गई और अजीत जोगी प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री बने। यहीं से छत्तीसगढ़ कांग्रेस के पहले युग की शुरुआत हुई।

कांग्रेस के दो अलग राजनीतिक मॉडल जोगी और भूपेश

छत्तीसगढ़ कांग्रेस के 25 वर्ष को मोटे तौर पर दो बड़े राजनीतिक मॉडल में देखा जा सकता है। पहला मॉडल अजीत जोगी का था। इसमें मुख्यमंत्री मजबूत केंद्र था और प्रशासनिक नियंत्रण तथा व्यक्तिगत राजनीतिक प्रभाव की बड़ी भूमिका थी। दूसरा मॉडल भूपेश बघेल के दौर में उभरा। इसमें संगठन को आक्रामक राजनीतिक अभियान से जोड़ा गया और स्थानीय अस्मिता को चुनावी राजनीति का केंद्रीय मुद्दा बनाया गया। इन दोनों के बीच का लंबा दौर कांग्रेस की खोज का दौर था। रविंद्र चौबे जैसे संगठन और विधानसभा के अनुभवी नेता, चरणदास महंत जैसे वरिष्ठ चेहरा, टीएस सिंहदेव जैसी राजघराने की राजनीतिक विरासत से आए प्रभावशाली नेता, ताम्रध्वज साहू जैसे सामाजिक आधार वाले नेता और भूपेश बघेल जैसे जमीनी संगठनकर्ता इसी संक्रमण के अलग-अलग चेहरे रहे। छत्तीसगढ़ कांग्रेस की राजनीति में अजीत जोगी का प्रभाव उनके मुख्यमंत्री पद से हटने के बाद भी खत्म नहीं हुआ। बाद के वर्षों में कांग्रेस के साथ उनके संबंध खराब हुए और 2016 में उन्होंने अलग राजनीतिक दल जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ बनाया। 2018 के चुनाव में जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ ने बसपा के साथ गठबंधन किया और उसे पांच सीटें मिलीं, जबकि बसपा ने दो सीटें जीतीं। यह घटना कांग्रेस के लिए इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि पहली बार उसके सामने उसके पुराने मुख्यमंत्री की अगुवाई में एक अलग राजनीतिक मंच खड़ा हुआ। हालांकि यह प्रयोग दीर्घकालीन चुनौती नहीं बन सका, लेकिन इसने यह जरूर दिखाया कि छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की राजनीति लंबे समय तक व्यक्तिगत नेतृत्व के प्रभाव से मुक्त नहीं रही। छत्तीसगढ़ कांग्रेस की कहानी को केवल दो मुख्यमंत्रियों के बीच बांटना अधूरा विश्लेषण होगा। यह तीन अलग-अलग चरणों की कहानी है। पहला चरण था सत्ता की स्थापना का, जिसमें अजीत जोगी का व्यक्तित्व कांग्रेस पर हावी रहा। दूसरा चरण था विपक्ष में लंबे संघर्ष का, जिसमें पार्टी ने कई क्षेत्रीय नेताओं के सहारे अपनी जमीन बचाए रखी। तीसरा चरण था 2018 की जबरदस्त वापसी का, जिसमें भूपेश बघेल ने संगठन, स्थानीय मुद्दों और राजनीतिक आक्रामकता को जोड़कर कांग्रेस को सत्ता तक पहुंचाया। अब पार्टी चौथे चरण में है। यह चरण सत्ता में वापसी की तैयारी का है। लेकिन इस बार चुनौती अलग है। सामने केवल भाजपा नहीं है। भाजपा के पास सरकार, संगठन, संसाधन और नए सामाजिक समीकरण हैं। कांग्रेस को अपने पुराने वोट आधार को बचाने के साथ नई पीढ़ी के मतदाताओं तक भी पहुंच बनानी होगी।

नेतृत्व मॉडल का अगला अध्याय लिखा जाना बाकी

छत्तीसगढ़ कांग्रेस की राजनीति में पिछले 25 वर्षों में चेहरे बहुत बदले हैं, लेकिन एक सवाल बार-बार लौटता रहा है। क्या पार्टी किसी एक बड़े नेता के भरोसे चुनाव लड़ेगी या ऐसा सामूहिक नेतृत्व तैयार करेगी जिसमें मुख्यमंत्री पद का चेहरा चुनाव से पहले नहीं बल्कि संगठन और जनता के बीच से उभरे? अजीत जोगी के दौर ने कांग्रेस को मजबूत मुख्यमंत्री दिया, लेकिन संगठनात्मक केंद्रीकरण की सीमा भी दिखाई। भूपेश बघेल के दौर ने कांग्रेस को मजबूत चुनावी मशीनरी दी और 68 सीटों की ऐतिहासिक जीत दिलाई, लेकिन 2023 ने यह भी बता दिया कि सत्ता में रहते हुए संगठन और नेतृत्व के बीच संतुलन बिगड़ जाए तो पांच साल की उपलब्धियां भी चुनावी गारंटी नहीं बनतीं। इसलिए आने वाले वर्षों में कांग्रेस की सबसे बड़ी जरूरत कोई एक नया चेहरा नहीं, बल्कि नई नेतृत्व व्यवस्था होगी। उसे वरिष्ठ नेताओं के अनुभव, क्षेत्रीय नेताओं की पकड़ और युवा नेतृत्व की ऊर्जा को एक साथ जोड़ना होगा। छत्तीसगढ़ की 25 साल की राजनीति में कांग्रेस ने सत्ता भी देखी, लंबा वनवास भी और फिर अप्रत्याशित वापसी भी। 2000 में 48 विधायकों के साथ शुरू हुई कांग्रेस 2003 में विपक्ष में चली गई। 2008 और 2013 में वह मामूली सुधार के बावजूद सत्ता से दूर रही। 2018 में 68 सीटों के साथ उसने इतिहास रचा और 2023 में 35 सीटों के साथ फिर विपक्ष में पहुंच गई। इस पूरे सफर में पार्टी का चेहरा बदलता रहा। अजीत जोगी का दौर खत्म हुआ तो भूपेश बघेल का दौर आया। उनके साथ टीएस सिंहदेव, चरणदास महंत, ताम्रध्वज साहू और रविंद्र चौबे जैसे पुराने चेहरे बने रहे। संगठन में नंद कुमार पटेल, मोहन मरकाम और दीपक बैज जैसे नेताओं की भूमिका आई। अब नई पीढ़ी के लिए जगह बनाने की चुनौती है। कांग्रेस के पास आज भी प्रदेश के कई हिस्सों में मजबूत सामाजिक आधार, अनुभवी नेतृत्व और विधानसभा में 35 विधायकों की मौजूदगी है। लेकिन केवल पुराने आधार पर भविष्य नहीं बनाया जा सकता। अगली लड़ाई में कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा सवाल यह नहीं होगा कि उसका मुख्यमंत्री चेहरा कौन है। सवाल यह होगा कि क्या वह ऐसा संगठन बना पाती है जिसमें हर संभाग का नेतृत्व दिखाई दे, हर सामाजिक वर्ग को राजनीतिक हिस्सेदारी मिले और चुनाव के समय पार्टी किसी एक चेहरे के बजाय एक विश्वसनीय राजनीतिक विकल्प के रूप में सामने आए। छत्तीसगढ़ कांग्रेस की पहली पारी सत्ता से शुरू हुई थी। दूसरी पारी लंबे विपक्ष से गुजरी। तीसरी पारी 68 सीटों की ऐतिहासिक जीत तक पहुंची और फिर सत्ता से बाहर हो गई। अब चौथी पारी की पटकथा लिखी जा रही है। इस बार कांग्रेस के सामने चुनौती केवल भाजपा को हराने की नहीं है। उसे पहले यह तय करना होगा कि अगले 25 वर्षों की कांग्रेस कैसी होगी और उसका चेहरा कौन नहीं, बल्कि उसकी सामूहिक राजनीतिक पहचान क्या होगी।

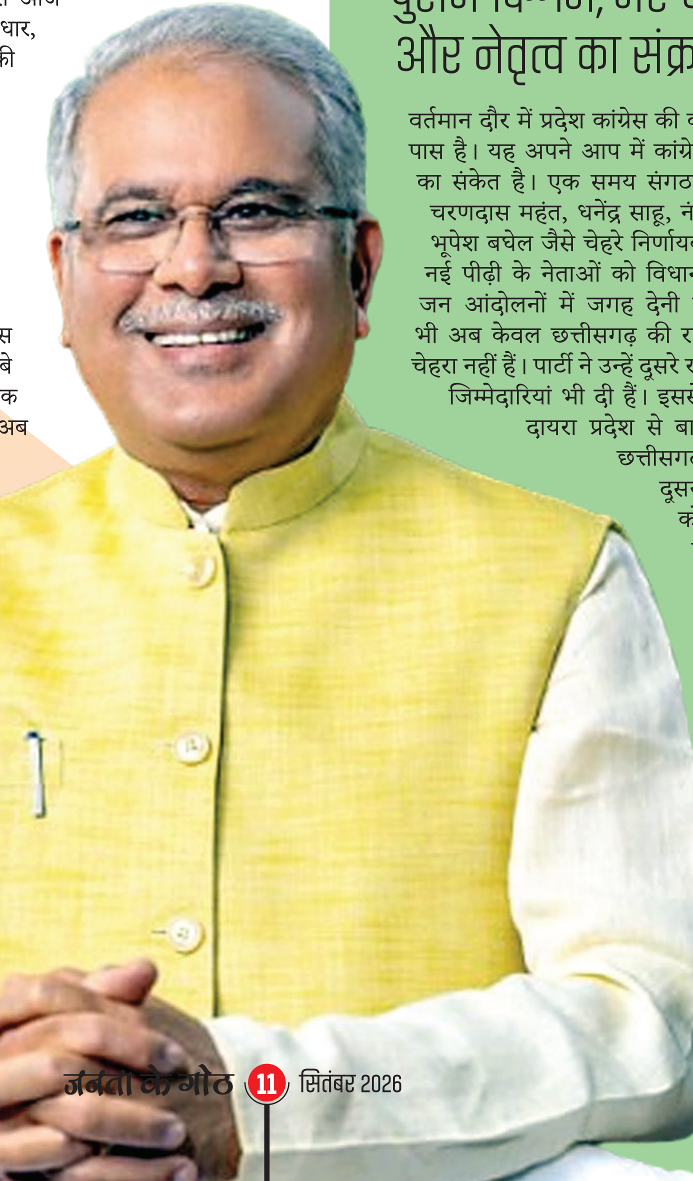

महिला और आदिवासी नेतृत्व

चेहरे बदले, लेकिन हिस्सेदारी का सवाल कायम

छत्तीसगढ़ की कांग्रेस राजनीति में महिलाओं और आदिवासी नेतृत्व की भूमिका भी लगातार बदलती रही है। अजीत जोगी के मंत्रिमंडल में गीतादेवी अकेली महिला मंत्री थीं। बाद के वर्षों में कांग्रेस ने महिला नेतृत्व को व्यापक जगह दी। फूलोदेवी नेताम जैसे चेहरे प्रदेश संगठन में प्रमुख भूमिका तक पहुंचे। इसी तरह आदिवासी राजनीति कांग्रेस के लिए हमेशा महत्वपूर्ण रही है। महेंद्र कर्मा से लेकर बस्तर और सरगुजा क्षेत्र के कई नेताओं तक पार्टी ने आदिवासी नेतृत्व को अपने राजनीतिक ढांचे में जगह दी। लेकिन 2023 के बाद भाजपा द्वारा विष्णुदेव साय को मुख्यमंत्री बनाए जाने ने कांग्रेस के सामने आदिवासी राजनीति की चुनौती को और गंभीर बना दिया है। अब कांग्रेस के लिए सिर्फ आदिवासी सीटें जीतना पर्याप्त नहीं होगा। उसे आदिवासी समाज में ऐसा नेतृत्व भी खड़ा करना होगा जो सत्ता और संगठन दोनों स्तरों पर विश्वसनीय दिखाई दे।

पुराने दिग्गज, नए चेहरे और नेतृत्व का संक्रमण

वर्तमान दौर में प्रदेश कांग्रेस की कमान दीपक बैज के पास है। यह अपने आप में कांग्रेस की बदलती पीढ़ी का संकेत है। एक समय संगठन में अजीत जोगी, चरणदास महंत, धनेंद्र साहू, नंद कुमार पटेल और भूपेश बघेल जैसे चेहरे निर्णायक थे। अब पार्टी को नई पीढ़ी के नेताओं को विधानसभा, संगठन और जन आंदोलनों में जगह देनी होगी। भूपेश बघेल भी अब केवल छत्तीसगढ़ की राजनीति तक सीमित चेहरा नहीं हैं। पार्टी ने उन्हें दूसरे राज्यों में संगठनात्मक जिम्मेदारियां भी दी हैं। इससे उनका राजनीतिक दायरा प्रदेश से बाहर बढ़ा है, लेकिन छत्तीसगढ़ में इसका एक दूसरा अर्थ भी है। पार्टी को अब उनके अलावा ऐसे नेताओं की दूसरी पंक्ति तैयार करनी होगी जो राज्य में लगातार संगठन चला सकें। यही वह चुनौती है जो 2023 के बाद कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी है।

अजीत जोगी का दौर

कांग्रेस सरकार थी, लेकिन सत्ता का केंद्र एक ही था

अजीत जोगी का मुख्यमंत्री बनना अपने आप में असाधारण राजनीतिक घटनाक्रम था। राज्य का गठन हुआ तो वे विधानसभा के सदस्य नहीं थे। बाद में भाजपा विधायक रामदयाल उइके से मरवाही सीट खाली करवाकर उन्होंने वहां से चुनाव लड़ा और विधानसभा पहुंचे। जोगी सरकार में मंत्रिमंडल का आकार भी उस दौर की राजनीति को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। 90 सदस्यीय विधानसभा में शुरुआत में 29 मंत्री बनाए गए। यानी लगभग हर तीसरा विधायक सरकार का हिस्सा था। जोगी ने अपने पास कोई विभाग नहीं रखा। उनकी सरकार में राजेंद्र प्रसाद शुक्ला, रामचंद्र सिंहदेव, महेंद्र कर्मा, प्रेमसाय सिंह टेकाम, चनेशराम राठिया, धनेश पाटिला, नंद कुमार पटेल, रविंद्र चौबे, केके गुप्ता, सत्यनारायण शर्मा, माधव सिंह ध्रुव, रामपुकार सिंह, गीतादेवी सिंह और अमितेष शुक्ला जैसे नेता कैबिनेट में थे। निर्दलीय डेरहू प्रसाद धृतलहरे को भी कैबिनेट मंत्री बनाया गया। राज्य मंत्रियों में भूपेश बघेल, शंकर सोढ़ी, मोहम्मद अकबर, विधान मिश्रा, मनोज मंडावी, बदरूद्दीन कुरैशी, देवेंद्र बहादुर सिंह, तुलेश्वर सिंह और ताम्रध्वज साहू जैसे चेहरे थे। गीतादेवी उस समय मंत्रिमंडल की अकेली महिला मंत्री थीं। बाद में धनेंद्र साहू को भी सरकार में शामिल किया गया। यह टीम आगे चलकर छत्तीसगढ़ कांग्रेस के कई दशकों की राजनीति की रीढ़ बनने वाली थी। लेकिन जोगी सरकार की एक खासियत यह भी रही कि सत्ता के केंद्र में मुख्यमंत्री की भूमिका अत्यंत प्रभावशाली थी। प्रशासनिक अनुभव और राजनीतिक नियंत्रण के मिश्रण ने जोगी को मजबूत मुख्यमंत्री बनाया, लेकिन यही केंद्रीकरण आगे चलकर कांग्रेस के भीतर नेतृत्व के दूसरे केंद्रों के उभार की जमीन भी बना। जोगी का कार्यकाल 7 दिसंबर 2003 तक रहा। इसके बाद प्रदेश की राजनीति पूरी तरह बदल गई।

मंत्रिमंडल की सीमा ने बदला सत्ता का गणित

जोगी सरकार के शुरुआती दौर में कांग्रेस के भीतर मंत्री बनने की होड़ स्वाभाविक थी। लेकिन केंद्र सरकार द्वारा मंत्रिमंडल के आकार पर संवैधानिक सीमा तय किए जाने के बाद समीकरण बदल गए। 90 सदस्यीय विधानसभा में मुख्यमंत्री को छोड़कर केवल 12 मंत्री रखने की व्यवस्था लागू हुई। इसके बाद सरकार के सामने यह कठिन फैसला आया कि किसे मंत्रिमंडल में रखा जाए और किसे बाहर किया जाए। रजिंदर पाल सिंह भाटिया, विक्रम उसेंडी, पूनम चंद्राकर, सत्यानंद राठिया और महेश बघेल जैसे चेहरों को मंत्री पद से हटाया गया। यह घटना केवल मंत्रिमंडल की संख्या घटने का मामला नहीं थी। इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि नई राज्य राजनीति में पद सीमित होंगे, लेकिन दावेदार अनेक। कांग्रेस के भीतर क्षेत्रीय संतुलन, सामाजिक समीकरण और व्यक्तिगत प्रभाव धीरे-धीरे सत्ता के फैसलों में ज्यादा महत्वपूर्ण होने लगे।

2003 के बाद से लगातार 15 साल विपक्ष में रहकर संघर्ष

2003 के विधानसभा चुनाव ने कांग्रेस की पूरी राजनीतिक दिशा बदल दी। भाजपा ने 50 सीटें जीतकर बहुमत हासिल किया, जबकि कांग्रेस 37 सीटों पर सिमट गई। इसके बाद कांग्रेस का अगला डेढ़ दशक सत्ता से बाहर बीता। 2008 में कांग्रेस 38 सीटों तक पहुंची। 2013 में उसकी संख्या 39 हुई। आंकड़े देखने पर यह लगातार मामूली सुधार जैसा दिखाई देता है, लेकिन असल राजनीति कहीं अधिक जटिल थी। पार्टी सत्ता में लौटने में सफल नहीं हो पा रही थी, जबकि भाजपा लगातार तीन चुनाव जीतकर अपनी सरकार मजबूत करती जा रही थी। इस दौर में कांग्रेस का कोई एक निर्विवाद चेहरा नहीं था। प्रदेश संगठन और विधानसभा में अलग-अलग नेताओं की भूमिका बढ़ती गई। रविंद्र चौबे, चरणदास महंत, टीएस सिंहदेव, भूपेश बघेल, ताम्रध्वज साहू, सत्यनारायण शर्मा, धनेंद साहू, नंद कुमार पटेल और महेंद कर्मा जैसे नेताओं की अपनी-अपनी राजनीतिक जमीन थी। यही कांग्रेस की ताकत भी थी और कमजोरी भी। पार्टी के पास नेताओं की कमी नहीं थी, लेकिन एक ऐसा केंद्रीय चेहरा नहीं था जो पूरे प्रदेश में संगठन, कार्यकर्ता और चुनावी रणनीति को एक दिशा में खड़ा कर सके।

2011 के बाद संगठन में बदलाव, लेकिन चुनौती वही

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के स्तर पर भी नेतृत्व में लगातार परिवर्तन हुआ। चरणदास महंत, धनेंद साहू, नंद कुमार पटेल, फिर दोबारा चरणदास महंत और उसके बाद भूपेश बघेल जैसे नेताओं ने संगठन की कमान संभाली। आगे चलकर मोहन मरकाम और दीपक बैज इस क्रम का हिस्सा बने। यह बदलाव महज पदों का परिवर्तन नहीं था। कांग्रेस धीरे-धीरे ऐसी पार्टी में बदल रही थी जिसमें अलग-अलग सामाजिक और क्षेत्रीय समूहों का प्रतिनिधित्व दिखाई देता था। लेकिन 2013 का विधानसभा चुनाव कांग्रेस के लिए निर्णायक झटका लेकर आया। भाजपा 49 सीटों पर रही और कांग्रेस 39 पर। दोनों दलों के बीच अंतर बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन सत्ता फिर भी भाजपा के पास रही। यहीं से कांग्रेस के भीतर यह सवाल तेज हुआ कि केवल भाजपा विरोध पर्याप्त नहीं है। पार्टी को अपने लिए नया राजनीतिक आख्यान भी तैयार करना होगा।

2018 में धमाकेदार वापसी कर पलटे सारे पुराने आंकड़े

भूपेश सरकार में कांग्रेस का चेहरा बदला, राजनीति की भाषा भी बदली

2018 का विधानसभा चुनाव छत्तीसगढ़ कांग्रेस के 25 साल के इतिहास का सबसे बड़ा चुनावी मोड़ है। कांग्रेस ने 90 में से 68 सीटें जीत लीं। भाजपा केवल 15 सीटों पर रह गई। जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ को पांच और बसपा को दो सीटें मिलीं। 2003 से 2013 तक लगातार 37, 38 और 39 सीटों के आसपास रहने वाली कांग्रेस अचानक 68 सीटों तक पहुंच गई। यह केवल सरकार विरोधी लहर नहीं थी। यह संगठनात्मक पुनर्गठन, नेतृत्व की स्पष्टता और स्थानीय मुद्दों को राजनीतिक भाषा में बदलने का परिणाम भी था। भूपेश बघेल मुख्यमंत्री बने। लेकिन कांग्रेस के भीतर मुख्यमंत्री पद की राजनीति पूरी तरह एकरेखीय नहीं थी। टीएस सिंहदेव जैसे वरिष्ठ नेता का प्रभाव भी मजबूत था। ताम्रध्वज साहू और चरणदास महंत जैसे नेताओं की अपनी राजनीतिक हैसियत थी। इसलिए 2018 के बाद कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती विपक्ष को हराना नहीं, बल्कि सत्ता के भीतर अपने अलग-अलग शक्ति केंद्रों को संतुलित रखना थी।

भूपेश बघेल के मुख्यमंत्री बनने के बाद कांग्रेस की राजनीति में एक और परिवर्तन दिखाई दिया। सरकार ने अपनी राजनीतिक पहचान को ग्रामीण अर्थव्यवस्था, किसान, स्थानीय परंपराओं और छत्तीसगढ़ी अस्मिता से जोड़ने की कोशिश की। इससे कांग्रेस ने यह संदेश देने का प्रयास किया कि उसकी राजनीति केवल राष्ट्रीय मुद्दों पर निर्भर नहीं है। यह प्रयोग 2018 में बेहद सफल रहा। लेकिन सत्ता के पांच वर्षों में पार्टी के भीतर नेतृत्व का सवाल पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और टीएस सिंहदेव के बीच सत्ता साझेदारी को लेकर समय-समय पर चर्चा होती रही। अंततः 2023 के विधानसभा चुनाव में भी यह सवाल कांग्रेस की आंतरिक राजनीति के केंद्र में रहा। यहीं कांग्रेस की पुरानी समस्या फिर दिखाई दी। पार्टी के पास कई बड़े नेता थे, लेकिन चुनावी चेहरा मुख्य रूप से मुख्यमंत्री के इर्द-गिर्द केंद्रित हो गया।

2013 के बाद कांग्रेस के नए ध्रुव बने भूपेश बघेल

छत्तीसगढ़ कांग्रेस की कहानी में 2014 के बाद सबसे महत्वपूर्ण बदलाव प्रदेश अध्यक्ष के रूप में भूपेश बघेल के उभार का था। भूपेश बघेल पहले से स्थापित नेता थे। पाटन की राजनीति में उनकी मजबूत पकड़ थी और वे लंबे समय से विधानसभा चुनाव लड़ते और जीतते रहे थे। लेकिन प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद उनकी भूमिका केवल एक विधायक की नहीं रही। उन्होंने संगठन को आक्रामक राजनीतिक लड़ाई के लिए तैयार किया। यह वह दौर था जब कांग्रेस ने भाजपा सरकार के खिलाफ कई मुद्दों को राजनीतिक अभियान में बदला। किसान, जमीन, आदिवासी अधिकार, स्थानीय अस्मिता और सरकार विरोधी भावनाओं को पार्टी ने चुनावी विमर्श का हिस्सा बनाया। इस प्रक्रिया में कांग्रेस के पुराने चेहरे पीछे नहीं गए, लेकिन नेतृत्व का केंद्र बदलने लगा। भूपेश बघेल की राजनीति का सबसे बड़ा प्रभाव यही था कि उन्होंने संगठन और चुनावी रणनीति को एक-दूसरे से जोड़ दिया। 2018 में इसका परिणाम सामने आया।

2024 का लोकसभा चुनाव: विधानसभा हार के बाद भी एक गढ़ बचा

2024 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को छत्तीसगढ़ में बड़ा झटका लगा। 11 लोकसभा सीटों में वह केवल कोरबा जीत सकी। ज्योत्सना महंत ने भाजपा की सरोज पांडे को 43,283 मतों से हराया। यह परिणाम कांग्रेस के लिए दो संदेश लेकर आया। पहला, 2023 की विधानसभा हार के बाद पार्टी का आधार कमजोर हुआ है। दूसरा, पार्टी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। कोरबा जैसे क्षेत्रों में उसका पुराना सामाजिक और राजनीतिक नेटवर्क अब भी प्रभावी है। कोरबा की जीत कांग्रेस के लिए केवल एक सांसद मिलने की बात नहीं थी। यह इस बात का संकेत भी थी कि जहां स्थानीय नेतृत्व मजबूत है और संगठन जमीन पर मौजूद है, वहां भाजपा के व्यापक चुनावी प्रभुत्व के बीच भी कांग्रेस मुकाबला कर सकती है।

2023 में 68 से घटकर 35 सीटों पर सिमटी

2023 के चुनाव में कांग्रेस सत्ता बरकरार नहीं रख सकी। भाजपा 54 सीटों के साथ सरकार बनाने में सफल हुई और कांग्रेस 35 सीटों पर आ गई। यह गिरावट कांग्रेस के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण थी क्योंकि पांच वर्ष पहले उसने 68 सीटों का आंकड़ा छुआ था। लेकिन इसे कांग्रेस के पूर्ण पतन के रूप में देखना भी सही नहीं होगा। 35 विधायक अभी भी एक मजबूत विपक्ष का आधार हैं। समस्या संख्या से अधिक उस राजनीतिक ऊर्जा की है, जिसने 2018 में कांग्रेस को 68 सीटों तक पहुंचाया था। 2023 के बाद कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या वह फिर से सामूहिक नेतृत्व तैयार कर पाएगी या पार्टी की राजनीति कुछ चुनिंदा चेहरों के इर्द-गिर्द घूमती रहेगी।

छत्तीसगढ़ में प्रशासन की तस्वीर बदली

बदल गया प्रशासनिक प्रतिनिधित्व, 12 जिलों की कमान महिला कलेक्टरों के हाथ

बेमेतरा
प्रतिष्ठा ममगई

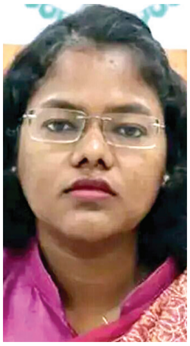
कोंडागांव
नुपूर राशि पन्ना

नारायणपुर
नम्रता जैन

सूरजपुर
रैना जमील

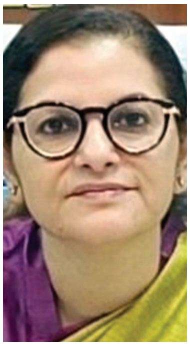
बलरामपुर
चंदन त्रिपाठी

कवर्धा
तुलिका प्रजापति

बालोद
दिव्या मिश्रा

मनेंद्रगढ़
संतन देवी जांगड़े

सारंगढ़
पद्मिनी भोई

मोहला-मानपुर
तनुजा सलाम

सक्ती
जयश्री जैन

कोरिया
रोक्तिमा यादव

छत्तीसगढ़ के प्रशासनिक नक्शे पर महिला नेतृत्व की मौजूदगी अब पहले से कहीं अधिक स्पष्ट दिखाई दे रही है। 18 अगस्त 2026 को हुए बड़े प्रशासनिक फेरबदल के बाद प्रदेश के 33 जिलों में से 12 जिलों की कमान महिला आईएएस अधिकारियों के हाथों में है। यानी औसतन हर तीसरे जिले में जिला प्रशासन का नेतृत्व महिला अधिकारी कर रही हैं। यह बदलाव केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि प्रशासनिक व्यवस्था में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की एक महत्वपूर्ण तस्वीर है। हालांकि इसे केवल महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के तौर पर देखना पर्याप्त नहीं होगा। कलेक्टर की नियुक्ति प्रशासनिक जरूरत, अधिकारी के अनुभव और शासन की प्राथमिकताओं से भी जुड़ी होती है। इसलिए इन नियुक्तियों का वास्तविक मूल्यांकन आने वाले समय में उनके कामकाज और जिलों में प्रशासनिक परिणामों से होगा। 18 अगस्त की तबादला सूची में कई जिलों को नए कलेक्टर मिले। इनमें तीन जिलों में महिला अधिकारियों की नई पदस्थापना विशेष रूप से उल्लेखनीय रही।

2016 बैच की आईएएस अधिकारी जयश्री जैन को सक्ती का कलेक्टर बनाया गया। मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी की जिम्मेदारी संभाल रहीं तुलिका प्रजापति को कबीरधाम भेजा गया, जबकि खेल एवं युवा कल्याण विभाग में संचालक रहीं तनुजा सलाम को मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी का कलेक्टर बनाया गया। यह बदलाव इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जैसे जिले में प्रशासनिक चुनौतियां अलग प्रकृति की हैं। यहां आदिवासी बहुल आबादी, भौगोलिक परिस्थितियां और विकास से जुड़े मुद्दे जिला प्रशासन के लिए विशेष महत्व रखते हैं। ऐसे जिले की कमान महिला अधिकारी को देना प्रशासनिक नेतृत्व में महिलाओं की भूमिका के विस्तार को रेखांकित करता है। वर्तमान पदस्थापना के अनुसार महिला आईएएस अधिकारी जिन जिलों का नेतृत्व कर रही हैं, उनमें कोंडागांव की नूपुर राशि पन्ना, बेमेतरा की प्रतिष्ठा ममगई, नारायणपुर की नम्रता जैन, बालोद की दिव्या मिश्रा और सूरजपुर की रेना जमील शामिल हैं। इसके अलावा सक्ती में जयश्री जैन, कबीरधाम में तुलिका प्रजापति, मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में तनुजा सलाम, सारंगढ़-बिलाईगढ़ में पद्मिनी भोई साहू, बलरामपुर-रामानुजगंज में चंदन संजय त्रिपाठी, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में संतन देवी जांगड़े और कोरिया में रोक्तिमा यादव जिला प्रशासन की कमान संभाल रही हैं। इन जिलों का भौगोलिक विस्तार भी खास है। बस्तर से लेकर सरगुजा और मध्य छत्तीसगढ़ तक अलग-अलग क्षेत्रों में महिला अधिकारी जिला प्रशासन का नेतृत्व कर रही हैं। यानी महिला नेतृत्व किसी एक संभाग या क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गया है।

कलेक्टर: सिर्फ पद नहीं, निर्णय की जिम्मेदारी है

किसी जिले में कलेक्टर सरकार और जनता के बीच प्रशासनिक व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी होती हैं। विकास योजनाओं की निगरानी, राजस्व प्रशासन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति, महिला एवं बाल विकास, आपदा प्रबंधन, कानून-व्यवस्था तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में कलेक्टर की भूमिका केंद्रीय होती है। इस लिहाज से 33 में से 12 जिलों में महिला आईएएस अधिकारियों की मौजूदगी का अर्थ केवल यह नहीं है कि प्रशासन में महिलाओं की संख्या बढ़ी है। इसका व्यापक अर्थ यह है कि महिलाओं को अब उन पदों पर निर्णय लेने की जिम्मेदारी दी जा रही है, जहां नीतियों का असर सीधे जमीन पर दिखाई देता है।

नारी शक्ति का संदेश

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व वाली सरकार के संदर्भ में इन नियुक्तियों को महिला नेतृत्व और प्रशासनिक भागीदारी के दृष्टिकोण से देखा जा रहा है। लेकिन किसी भी सरकार के लिए असली कसौटी नियुक्तियों की संख्या नहीं, बल्कि उनके परिणाम होते हैं। महिला कलेक्टरों के नेतृत्व वाले जिलों में यदि प्रशासन अधिक जवाबदेह, योजनाओं का क्रियान्वयन अधिक प्रभावी, जनसुनवाई अधिक संवेदनशील और विकास की रफ्तार अधिक स्पष्ट दिखाई देती है, तभी यह बदलाव एक मजबूत प्रशासनिक मॉडल के रूप में स्थापित होगा। यही वजह है कि 12 महिला कलेक्टरों की मौजूदगी को केवल प्रतीकात्मक उपलब्धि मानना जल्दबाजी होगी। यह एक अवसर है, महिलाओं को नेतृत्व की जिम्मेदारी देने का भी और उनकी प्रशासनिक क्षमता को परिणामों के पैमाने पर परखने का भी।

बदलते छत्तीसगढ़ की तस्वीर

छत्तीसगढ़ जैसे सामाजिक और भौगोलिक विविधता वाले राज्य में प्रशासनिक नेतृत्व की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। 12 जिलों में महिला कलेक्टरों की नियुक्ति इस बदलते प्रशासनिक परिदृश्य की उल्लेखनीय तस्वीर पेश करती है। आखिरकार महिला सशक्तिकरण का सबसे मजबूत अर्थ यही है कि महिलाएं केवल योजनाओं की लाभार्थी न रहें, बल्कि नीति लागू करने वाली, फैसले लेने वाली और प्रशासन की दिशा तय करने वाली भूमिका में भी दिखाई दें। 18 अगस्त का प्रशासनिक फेरबदल इसी बदलाव की एक तस्वीर सामने लाता है। अब इस तस्वीर को स्थायी उपलब्धि में बदलने की जिम्मेदारी उन अधिकारियों के कामकाज और सरकार की प्रशासनिक प्राथमिकताओं पर होगी।

उजड़ा आशियाना

▪ तिलक राम साहू

कहानी

एक शाम की बात है। मैं और मेरे बाल-सखा गांव के सीमांत पर स्थित प्राचीन मंदिर के प्रांगण में बैठकर आपस में बात कर रहे थे। मंद-मंद शीतल पवन बह रही थी, विशाल वृक्षों की शाखाएँ झूम रही थीं और चिड़ियों का कलरव वातावरण को अत्यंत मधुर बना रहा था। तभी अचानक हमारी नज़र घने जंगल की ओर गई। दूर से एक विशालकाय शेर हमारी ओर बढ़ता हुआ दिखाई दिया। शेर को देखते ही हमारी चंचलता क्षण भर में लुप्त हो गई। भय के कारण किसी का कंठ सूख गया, तो किसी के हाथ-पांव काँपने लगे। ऐसा प्रतीत हुआ मानो मृत्यु सम्मुख खड़ी हो। हमारे समूह में हमारा सहपाठी टीनू भी उपस्थित था। संपूर्ण ग्राम में यह ख्याति थी कि वह मूक पशु-पक्षियों की भाषा और संकेतों को समझ लेता है। मैंने बिना संकोच किए उसे सबसे पहली पंक्ति में खड़ा कर दिया। बेचारा टीनू भय से शिहर रहा था, किंतु अब पीछे हटने का कोई मार्ग शेष न था। कुछ ही क्षणों में शेर हमारे अत्यंत समीप आकर ठहर गया। उसने ऐसी गगनभेदी गर्जना की कि संपूर्ण वातावरण थर्रा उठा। हम सभी प्राण बचाकर मंदिर के भीतर शरण लेने भाग गए, जबकि बाहर केवल टीनू भय और विवशता के बीच खड़ा रहा।

मैंने मंदिर के कपाट के पीछे से कंपित स्वर में पूछा— "टीनू... वह शेर क्या कह रहा है?" टीनू ने पहली लंबी सांस ली और लड़खड़ाते स्वर में बोला— "वह हमसे अत्यंत रुष्ट है।" "परंतु क्यों?" मैंने विस्मय से पूछा।

टीनू ने शेर के मनोभावों को शब्द देते हुए कहा "हे मनुष्यों! बाहर आओ। आज भय की जो अनुभूति तुम्हें हो रही है, उस भय को हम वन्यजीव वर्षों से सह रहे हैं। तुमने हमारे शांत जंगलों को छिन्न-भिन्न कर दिया। जिन वट-वृक्षों की शीतल छाया में हमारे बच्चे खेलते थे, आज वहाँ दैत्यकार मशीनें गरज रही हैं। जिन ऊँचे पर्वतों को हम अपना सुरक्षित आश्रय समझते थे, उन्हें तुमने पत्थरों के ढेर में परिवर्तित कर दिया। जिन साफ़ नदियों से हम अपनी प्यास बुझाते थे, उन्हें अपने कचरे से दूषित कर दिया। तुम कहते हो कि शेर गाँव में घुस आया... कभी आत्मचिंतन किया कि तुम्हारा गाँव हमारी सीमाओं का अतिक्रमण कर जंगल तक कैसे पहुँच गया?" हम सभी निरुत्तर और स्तब्ध थे। शेर ने पुनः आकाश की ओर दृष्टि उठाई और कहा— "हम कभी तुम्हारी नागरिक बस्तियों में नहीं गए थे। तुम ही हमारे प्राकृतिक आवासों में आए। पहले वृक्ष काटे, फिर मार्ग बनाए, तत्पश्चात कारखाने स्थापित किए और अब कहते हो कि वन्यजीव हिंसक एवं भयानक हैं। भयानक हम नहीं, मनुष्य का असीम लोभ है। एक दिन ऐसा आएगा जब अंतिम वृक्ष कट जाएगा और अंतिम नदी सूख जाएगी, तब मनुष्य को बोध होगा कि धन-संपदा नहीं, अपितु यह प्रकृति ही सबसे बड़ा जीवन-धन थी।" टीनू की आँखें आँसुओं से भरी थीं और उसका स्वर भर्रा गया था। इतना कहने के पश्चात शेर मुड़ा और शांत कदमों से पुनः सघन वन की ओर लौट गया। हम सभी मंदिर से बाहर निकले। चारों ओर एक भारी सन्नाटा व्याप्त था। हवा भी जैसे शोक-गीत गा रही थी। मंदिर के द्वार पर एक अति प्राचीन वृक्ष खड़ा था, जिसकी आधी शाखाएँ काट दी गई थीं। उस पर बने एक जर्जर घोंसले में एक चिड़िया अपने शावकों को ढांढस बँधाने का प्रयास कर रही थी। शायद वह भी अपने उजड़े हुए संसार के तिनके समेट रही थी। उस कारुणिक दृश्य ने हमारी चेतना और आत्मा को झकझोर कर रख दिया। उस दिन प्रथम बार हमें यह अहसास हुआ कि अनाथ केवल वे बालक नहीं होते जिनके माता-पिता नहीं हैं; अनाथ तो वे पक्षी भी हैं जिनके नीड़ और वृक्ष काट दिए गए, वे मृग भी हैं जिनके हरे-भरे तृण-मैदान छीन लिए गए, वे गजराज भी हैं जिनके वन उजड़ गए, और वह शेर भी, जो अपने ही घर से बेघर होकर मानव बस्तियों तक भटकने पर विवश हुआ। उसी पवित्र मंदिर के प्रांगण में हमने दृढ़ संकल्प लिया कि हम प्रत्येक वर्ष नए वृक्ष रोपेंगे, वनों की रक्षा करेंगे और समाज में पर्यावरण संरक्षण की चेतना जगाएंगे। क्योंकि जब वन सुरक्षित रहेंगे, तभी वन्यजीव सुरक्षित रहेंगे; जब वन्यजीव बचेंगे, तभी प्रकृति का संतुलन सुरक्षित रहेगा। और जब प्रकृति बचेगी, तभी मानव सभ्यता का अस्तित्व सुरक्षित रहेगा। जय हिंद! जय प्रकृति माता!

प्रमोशन की राह में TET की दीवार

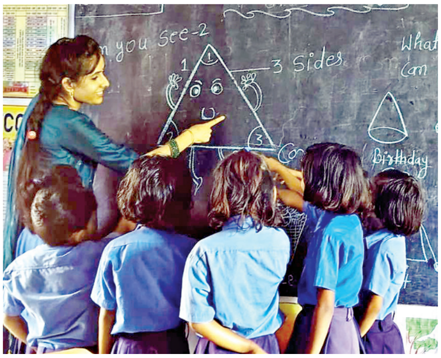

सहायक शिक्षकों की पदोन्नति प्रक्रिया शुरू, वरिष्ठता के साथ पात्रता की नई कसौटी ने बढ़ाई बेचैनी

छत्तीसगढ़ के सरकारी स्कूलों में सालों से पदोन्नति का इंतजार कर रहे सहायक शिक्षकों के सामने अब एक नई उलझन खड़ी हो गई है। पदोन्नति की प्रक्रिया भले शुरू हो गई हो, लेकिन इस बार केवल वरिष्ठता सूची में ऊपर होना शिक्षक पद तक पहुंचने की गारंटी नहीं है। शिक्षक पात्रता परीक्षा यानी TET की अनिवार्यता ने प्रमोशन के पूरे समीकरण को बदल दिया है। इसका सबसे सीधा असर उन शिक्षकों पर पड़ सकता है, जिन्होंने सरकारी स्कूलों में 20 से 25 साल तक सेवा की है, लेकिन TET उत्तीर्ण नहीं की है। दूसरी ओर, अपेक्षाकृत कम सेवा अवधि वाले ऐसे शिक्षक, जिन्होंने TET पास कर ली है और बाकी निर्धारित योग्यताएं पूरी करते हैं, पदोन्नति की दौड़ में उनसे आगे निकल सकते हैं। यही स्थिति अब शिक्षक संगठनों और कर्मचारियों के बीच नाराजगी की बड़ी वजह बन रही है। इस पूरे विवाद को केवल सरकारी नियम बनाम शिक्षक विरोध के रूप में देखना आसान होगा, लेकिन असली मुद्दा इससे कहीं बड़ा है। शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता जरूरी है और शिक्षक की न्यूनतम पेशेवर दक्षता सुनिश्चित करना भी सरकार की जिम्मेदारी है। लेकिन दूसरी तरफ दशकों का कक्षा अनुभव भी किसी शिक्षक की पेशेवर क्षमता का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

इसलिए सवाल यह है कि क्या व्यवस्था ऐसी हो सकती है जिसमें TET की गुणवत्ता कसौटी भी बनी रहे और वर्षों की सेवा तथा अनुभव को भी पूरी तरह नजरअंदाज न किया जाए? फिलहाल विभाग ने प्रक्रिया शुरू कर दी है और पात्र शिक्षकों के विषयवार प्रस्ताव 7 सितंबर 2026 तक स्थापना कक्ष में जमा करने के निर्देश दिए हैं। इसके बाद दस्तावेजों और पात्रता की जांच होगी। यही प्रक्रिया तय करेगी कि इस बार वरिष्ठता सूची में ऊपर बैठे कितने शिक्षक वास्तव में प्रमोशन तक पहुंच पाते हैं और कितने TET की अनिवार्यता के कारण पीछे रह जाते हैं। छत्तीसगढ़ में सहायक शिक्षकों का यह प्रमोशन इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सिर्फ कुछ पदों को भरने की कवायद नहीं है। यह उस बड़े सवाल की परीक्षा भी है कि सरकारी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की पहचान आखिर किससे तय होगी कि उसकी परीक्षा से, उसकी डिग्री से या फिर उसके वर्षों के अनुभव से?

विभागीय रिकॉर्ड भी बनेगा अहम आधार

पदोन्नति की प्रक्रिया में शिक्षकों के सेवा रिकॉर्ड की भी पड़ताल होगी। प्रस्ताव के साथ 2022 से 2026 तक की गोपनीय चरित्रावली यानी CR मांगी गई है। इसके अलावा 2021 से 2025 तक का अचल संपत्ति विवरण भी देना होगा। किसी शिक्षक के खिलाफ विभागीय जांच, न्यायालयीन प्रकरण या निलंबन जैसी स्थिति रही है तो उसकी जानकारी भी प्रस्ताव में शामिल करनी होगी। संविलियन से पहले निकाय परिवर्तन से जुड़ी जानकारी भी उपलब्ध करानी होगी। यानी विभाग इस बार प्रमोशन को सिर्फ वरिष्ठता सूची के आधार पर आगे बढ़ाने के बजाय पूरे सेवा रिकॉर्ड की जांच के बाद पात्रता तय करने की दिशा में बढ़ रहा है। पदोन्नति के लिए 1 अप्रैल 2026 को जारी अंतिम वरिष्ठता सूची को आधार बनाया गया है। ई-संवर्ग में हिन्दी के लिए सरल क्रमांक 5520 और विज्ञान के लिए 6604 तक के शिक्षकों के प्रस्ताव लिए जाएंगे। अंग्रेजी, गणित और संस्कृत विषय में TET उत्तीर्ण सभी पात्र शिक्षकों के प्रस्ताव भेजे जा सकते हैं। टी-संवर्ग में भी TET और अन्य निर्धारित योग्यताएं पूरी करने वाले शिक्षकों को ही प्रस्ताव में शामिल किया जाएगा। इससे यह स्पष्ट है कि वरिष्ठता सूची में नाम होना और पदोन्नति के लिए पात्र होना—दो अलग-अलग बातें बन गई हैं।

20-25 साल की नौकरी का सवाल?

यही वह बिंदु है जहां शिक्षकों की नाराजगी को समझना जरूरी है। एक शिक्षक जिसने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा प्राथमिक स्कूलों में बच्चों को पढ़ाते हुए गुजार दिया, अगर पदोन्नति के समय उससे कम सेवा अवधि वाला शिक्षक आगे निकल जाता है, तो स्वाभाविक रूप से वरिष्ठता की उपयोगिता पर सवाल उठेंगे। मसलन, कोई शिक्षक 20-25 वर्षों से सेवा में है, लेकिन TET पास नहीं है। दूसरी ओर पांच-छह साल की सेवा वाला शिक्षक TET उत्तीर्ण है और पद के लिए बाकी शैक्षणिक योग्यताएं भी पूरी करता है। नए पात्रता मानकों के तहत दूसरा शिक्षक पदोन्नति का हकदार हो सकता है। यहीं शिक्षक संगठनों की मूल आपत्ति है कि क्या लंबे अनुभव और वरिष्ठता को एक अनिवार्य पात्रता परीक्षा के सामने पूरी तरह गौण कर दिया जाना चाहिए? दूसरी तरफ सरकार के नियम के पीछे शिक्षा की गुणवत्ता और निर्धारित पात्रता सुनिश्चित करने का तर्क है। इसलिए विवाद सिर्फ प्रमोशन का नहीं, बल्कि अनुभव बनाम औपचारिक पात्रता के बीच संतुलन का भी है।

शिक्षक संगठनों के सामने बड़ी चुनौती

इस फैसले ने शिक्षक संगठनों के सामने भी एक कठिन सवाल खड़ा किया है। उन्हें एक ओर शिक्षकों की वरिष्ठता और वर्षों की सेवा का पक्ष रखना है, वहीं दूसरी ओर सरकार द्वारा निर्धारित शैक्षणिक पात्रता के नियम को भी चुनौती देनी होगी। शिक्षकों की नाराजगी का बड़ा कारण यह है कि TET की शर्त का असर पुराने शिक्षकों पर असमान रूप से पड़ सकता है। कई वरिष्ठ शिक्षक ऐसे हैं जिन्होंने उस दौर में नियुक्ति हासिल की थी, जब वर्तमान स्वरूप में TET उनकी सेवा शर्त का हिस्सा नहीं थी। अब वही परीक्षा उनके करियर के अगले पड़ाव में बाधा बन रही है—यही तर्क आंदोलनरत शिक्षकों और संगठनों की ओर से सामने आ रहा है।

वरिष्ठता बनाम पात्रता का नया विवाद

स्कूल शिक्षा विभाग ने सहायक शिक्षक, सहायक शिक्षक एलबी और सहायक शिक्षक विज्ञान प्रयोगशाला के पदों पर पदोन्नति के लिए दुर्ग संभाग के सभी जिला शिक्षा अधिकारियों से पात्र शिक्षकों के प्रस्ताव मांगे हैं। विभागीय निर्देश के मुताबिक 1 अप्रैल 2026 तक न्यूनतम पांच साल की सेवा पूरी करने वाले शिक्षक ही निर्धारित प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं। लेकिन यहां से कहानी बदलती है। सहायक शिक्षक और सहायक शिक्षक एलबी के लिए प्राथमिक और पूर्व माध्यमिक स्तर की TET उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। विज्ञान प्रयोगशाला सहायक शिक्षक के लिए पूर्व माध्यमिक स्तर की TET जरूरी है। इसके साथ संबंधित पद के अनुरूप स्नातक और व्यावसायिक योग्यता भी पूरी करनी होगी। यानी किसी शिक्षक की सेवा अवधि भले दो दशक से अधिक हो, लेकिन यदि वह निर्धारित TET योग्यता पूरी नहीं करता, तो केवल वरिष्ठता के आधार पर उसे पदोन्नति नहीं मिल सकेगी।

TET अकेली कसौटी नहीं

हालांकि इस पूरी प्रक्रिया को केवल TET तक सीमित करके देखना भी सही नहीं होगा। विभाग ने पदोन्नति के लिए कई स्तरों पर पात्रता तय की है। शिक्षक के पास संबंधित विषय में स्नातक की डिग्री होना जरूरी है। हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत के लिए संबंधित साहित्य विषय में स्नातक की योग्यता निर्धारित है। सामाजिक विज्ञान के लिए इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र या राजनीति विज्ञान में से निर्धारित विषय की योग्यता जरूरी है। गणित और जीव विज्ञान के लिए भी संबंधित विषय संयोजन और शैक्षणिक योग्यता का प्रावधान है। इसका मतलब साफ है कि पदोन्नति अब केवल कितने साल नौकरी की, इस सवाल का जवाब नहीं है। सेवा अवधि के साथ TET, स्नातक, व्यावसायिक योग्यता और संबंधित विषय की पात्रता भी देखी जाएगी।

शॉर्टेज से उठे सवाल ?

धान के हिसाब में 68 हजार टन की कमी खरीदी के बाद सोसाइटियों में उठे बड़े सवाल

छत्तीसगढ़ की पहचान सिर्फ धान के कटोरे के रूप में नहीं, बल्कि देश के बड़े धान उत्पादक राज्यों में एक महत्वपूर्ण केंद्र के तौर पर भी है। ऐसे में सरकारी उपार्जन व्यवस्था में धान की बड़ी मात्रा का हिसाब नहीं मिलना महज आंकड़ों का मामला नहीं माना जा सकता। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदे गए धान के लेखा मिलान में 68,491 टन धान का शॉर्टेज सामने आया है।

प्रदेश में इस सीजन करीब 141 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हुई थी। इतनी बड़ी मात्रा में धान का हिसाब नहीं मिलना खरीदी, भंडारण और परिवहन की पूरी व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है। हालांकि विभागीय स्तर पर इसे सूखत, खराब होने या अन्य कारणों से हुई कमी से जोड़कर देखा जा रहा है, लेकिन अंतिम तस्वीर लेखा मिलान और जांच पूरी होने के बाद ही साफ होगी। 68,491 टन का शॉर्टेज निश्चित रूप से छोटा आंकड़ा नहीं है। लेकिन इसे सीधे भ्रष्टाचार का प्रमाण मान लेना भी जल्दबाजी होगी। धान में नमी, सूखत, भंडारण के दौरान नुकसान, परिवहन और अन्य तकनीकी कारणों से होने वाली कमी का भी नियमानुसार आकलन करना होगा।

असल सवाल यह है कि स्वीकार्य सूखत और वास्तविक अनियमितता के बीच की सीमा कहां है? यही जांच इस पूरे मामले की दिशा तय करेगी। यदि कमी प्राकृतिक या तकनीकी कारणों से हुई है तो उसका स्पष्ट हिसाब सामने आना चाहिए। लेकिन जहां रिकॉर्ड और वास्तविक स्टॉक के बीच अंतर का कोई संतोषजनक कारण नहीं मिलता, वहां जिम्मेदारी तय करना जरूरी होगा। धान सिर्फ एक कृषि उपज नहीं है। छत्तीसगढ़ में यह किसान की मेहनत, सरकारी खरीद व्यवस्था और सार्वजनिक धन—तीनों से जुड़ा विषय है। इसलिए 68 हजार टन से अधिक धान के शॉर्टेज का मामला केवल सोसाइटियों के बही-खाते तक सीमित नहीं रहना चाहिए। लेखा मिलान से लेकर जिम्मेदारी तय होने तक पूरी प्रक्रिया पारदर्शी होगी, तभी धान के हिसाब पर उठे सवालों का ठोस जवाब मिल सकेगा।

कांकेर में सबसे ज्यादा शॉर्टेज

जिलावार आंकड़े इस पूरे मामले को और गंभीर बनाते हैं। कांकेर में 13,436 टन धान का शॉर्टेज दर्ज किया गया है, जो प्रदेश में सबसे अधिक है। इसके बाद राजनांदगांव में 4,825 टन, बस्तर में 4,739 टन, गरियाबंद में 4,424 टन और बालोद में 4,248 टन धान की कमी सामने आई है। इसके अलावा मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी में 3,906 टन, कबीरधाम में 3,838 टन और खैरागढ़-छुईखदान-गंडई में 3,467 टन शॉर्टेज दर्ज किया गया है। दूसरी ओर कुछ जिलों में कमी अपेक्षाकृत कम है। सक्ती में 483 टन, सूरजपुर में 486 टन, जांजगीर-चांपा में 471 टन, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही में 566 टन और सारंगढ़-बिलाईगढ़ में 314 टन का शॉर्टेज दर्ज हुआ है। बलौदाबाजार में 292 टन, बिलासपुर में 214 टन, रायपुर में 210 टन और एमसीबी में 231 टन की कमी सामने आई है। सरगुजा में यह आंकड़ा 1,151 टन है। प्रदेश के 33 जिलों में से 7 जिलों में शॉर्टेज शून्य बताया गया है, जबकि 26 जिलों में किसी न किसी स्तर पर कमी दर्ज हुई है।

अब जिम्मेदारी तय करने की बारी

धान का लेखा मिलान पूरा होने के बाद अगला सवाल सीधे जिम्मेदारी पर जाएगा। विभागीय व्यवस्था के अनुसार जिन सोसाइटियों में धान की कमी पाई गई है, वहां संबंधित धान खरीदी प्रभारी या प्रबंधक से शॉर्टेज की भरपाई कराई जा सकती है। उन्हें निर्धारित मात्रा का धान जमा करना होगा या उसकी कीमत चुकानी पड़ सकती है। यदि संबंधित जिम्मेदार व्यक्ति ऐसा नहीं करता है तो उसके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जा सकती है। यही वजह है कि आने वाले दिनों में सिर्फ शॉर्टेज का आंकड़ा ही महत्वपूर्ण नहीं होगा, बल्कि यह भी देखा जाएगा कि किस केंद्र पर कितनी कमी हुई और उसके लिए कौन जिम्मेदार पाया जाता है।

मुद्दे पर सियासत भी शुरू

धान की कमी सामने आने के बाद इस मुद्दे पर राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप भी शुरू हो गए हैं। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने इसे गंभीर मामला बताते हुए व्यापक जांच की मांग की है। उन्होंने आरोप लगाया कि धान में सामने आई कमी सामान्य नहीं है और इसमें बड़े स्तर पर भ्रष्टाचार की आशंका है। बैज ने दावा किया कि वास्तविक कमी सामने आए आंकड़े से भी अधिक हो सकती है। उन्होंने 250 करोड़ रुपये से अधिक के भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए सरकार और जिम्मेदार लोगों की भूमिका की जांच की मांग की है। हालांकि इन आरोपों की पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी। इसलिए फिलहाल यह महत्वपूर्ण है कि राजनीतिक आरोपों से अलग प्रशासनिक स्तर पर प्रत्येक केंद्र के रिकॉर्ड और भौतिक स्टॉक का निष्पक्ष मिलान किया जाए।

2740 केंद्रों में से 2634 का मिलान पूरा

प्रदेश में धान खरीदी के लिए कुल 2740 उपार्जन केंद्र बनाए गए थे। इनमें से 2634 केंद्रों में धान का लेखा मिलान पूरा हो चुका है। इसी प्रक्रिया के दौरान अलग-अलग जिलों की सोसाइटियों में धान की मात्रा में अंतर सामने आया। यहां सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि सरकारी रिकॉर्ड में दर्ज धान और भौतिक रूप से उपलब्ध धान के बीच इतना बड़ा अंतर आखिर पैदा कैसे हुआ? धान की प्रकृति को देखते हुए कुछ मात्रा में सूखत या भंडारण के दौरान नुकसान होना असामान्य नहीं है। लेकिन 68 हजार टन से अधिक का अंतर सामने आने के बाद हर केंद्र का अलग-अलग हिसाब देखना जरूरी हो जाता है। कहां कितना धान खरीदा गया, कितना संग्रहित रहा, कितना मिलिंग के लिए भेजा गया और रिकॉर्ड के मुताबिक कितना शेष होना चाहिए था, इन सभी बिंदुओं का मिलान जांच की असली कुंजी होगी।

कातिल किरायेदार!

बीवी ने एक लाख में लिखवा दी अपने सुहाग के मौत की कहानी

एक सड़क हादसा... तेज रफ्तार पिकअप की टक्कर... सड़क पर पड़ी क्षतिग्रस्त बाइक और उसके पास दम तोड़ चुका एक युवक। पहली नजर में कहानी बिल्कुल सीधी लग रही थी। किसी ने सोचा भी नहीं था कि इस हादसे के पीछे रिश्तों की ऐसी उलझी हुई कहानी छिपी है, जिसमें पति, पत्नी, प्रेमी और सुपारी का खेल शामिल है। छत्तीसगढ़ के रामानुजगंज से झारखंड के गढ़वा को जोड़ने वाले मार्ग पर बरवाही मोड़ के पास 5 जून को श्रीकांत रवि की मौत को शुरुआत में सड़क दुर्घटना माना गया। लेकिन पुलिस की जांच जैसे-जैसे आगे बढ़ी, हादसे की तस्वीर धुंधली होती गई और उसके पीछे छिपी साजिश साफ दिखाई देने लगी। श्रीकांत रवि, रामानुजगंज निवासी और शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यालय सहायक था। उसकी मौत को लेकर उसकी मां शांति देवी के मन में शुरू से ही कुछ सवाल थे।

उन्होंने पुलिस अधीक्षक आशुतोष शेखर को आवेदन देकर अपनी बहू मनीषा देवी पर बेटे की हत्या कराने का आरोप लगाया। यहीं से उस मामले की असली जांच शुरू हुई, जिसे अब तक महज एक दुर्घटना समझा जा रहा था। इस मामले की सबसे विचलित करने वाली कड़ी यह है कि हत्या का आरोप किसी अनजान दुश्मन पर नहीं, बल्कि उस रिश्ते के भीतर से सामने आया, जहां भरोसा होना चाहिए था। एक तरफ करीब 13 साल की शादी थी, तीन बच्चे थे और परिवार था। दूसरी तरफ एक ऐसा प्रेम संबंध था, जिसने कथित तौर पर धीरे-धीरे पति को रास्ते की बाधा मान लिया। फिर तलाक की चाहत, कथित प्रेम संबंध, आपसी विवाद और अंत में एक लाख रुपये की सुपारी तक कहानी पहुंच गई। जिस मौत को दुनिया ने पहले एक सड़क दुर्घटना समझा, पुलिस की जांच ने उसे कथित सुनियोजित हत्या के रूप में सामने ला दिया। बरवाही मोड़ पर पिकअप की वह टक्कर सिर्फ एक बाइक से टकराती गाड़ी नहीं थी। पुलिस की जांच के मुताबिक उसके पीछे पहले से तैयार की गई वह पटकथा थी, जिसमें श्रीकांत को अपनी ही जिंदगी से बेखबर उस रास्ते पर भेजा गया था। उसे लगा था कि वह पत्नी से मिलने जा रहा है। उसे क्या पता था कि रास्ते में मौत उसका इंतजार कर रही है।

13 साल की शादी के बीच आया तीसरा शख्स

करीब 13 वर्ष पहले मनीषा की शादी श्रीकांत रवि से हुई थी। मनीषा झारखंड मुक्ति मोर्चा के गढ़वा जिलाध्यक्ष शंभू राम की पुत्री है। शादी के बाद दोनों का परिवार आगे बढ़ा और उनके तीन बच्चे हुए। फिर उनकी जिंदगी में मोहम्मद हसन की एंट्री हुई। रामानुजगंज के विजयनगर निवासी मोहम्मद हसन मोबाइल की दुकान चलाता था। कुछ समय पहले वह श्रीकांत के घर में किराएदार बनकर रहने लगा। एक ही छत के आसपास रहने के दौरान मनीषा और हसन के बीच नजदीकियां बढ़ीं। धीरे-धीरे यह रिश्ता कथित प्रेम संबंध में बदल गया। रिश्ते की भनक श्रीकांत को लगी तो घर का माहौल बदल गया। पति-पत्नी के बीच विवाद होने लगे। मनीषा अपने पति से तलाक लेकर हसन के साथ रहने पर अड़ गई। बात इतनी बढ़ी कि पिछले कुछ महीनों से मनीषा अपने मायके चिनिया में रहने लगी थी। लेकिन दूरी ने इस रिश्ते को खत्म नहीं किया। पुलिस के अनुसार मोहम्मद हसन उससे मिलने वहां आता-जाता था। अब दोनों के सामने एक ही बाधा थी, जिसका नाम था श्रीकांत।

मौत की ओर बुलाता रहा पत्नी का फोन

घटना वाले दिन मनीषा ने श्रीकांत को फोन किया। उसे मिलने के लिए अपने मायके चिनिया बुलाया गया। श्रीकांत अपनी अपाचे मोटरसाइकिल से चिनिया के लिए निकल पड़ा। उधर दूसरी तरफ कथित साजिश के किरदार अपनी-अपनी जगह तैयार थे। पुलिस के अनुसार मोहम्मद हसन अपने साथियों इमरान अंसारी और असराज अंसारी के साथ अर्टिगा कार में था। पिकअप चालक परवेज अंसारी भी योजना के मुताबिक रास्ते में मौजूद था। श्रीकांत को शायद इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि जिस मुलाकात के लिए वह घर से निकला है, वह उसकी जिंदगी की आखिरी यात्रा बनने वाली है। बरवाही मोड़ के पास श्रीकांत की मोटरसाइकिल पहुंची। इसी दौरान कथित तौर पर घात लगाकर बैठे परवेज अंसारी ने पिकअप वाहन से उसकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि श्रीकांत की मौके पर ही मौत हो गई। इसके बाद आरोपी वहां से निकल गए। पीछे रह गया एक शव, क्षतिग्रस्त मोटरसाइकिल और एक ऐसा दृश्य, जिसे देखकर किसी को भी पहली नजर में यही लगता कि यह दुर्भाग्यपूर्ण सड़क हादसा है। लेकिन पुलिस के लिए कहानी इतनी आसान नहीं थी।

तलाक नहीं तो रची कत्ल की पटकथा

पुलिस जांच के अनुसार मनीषा और मोहम्मद हसन ने श्रीकांत को अपने रास्ते से हटाने की योजना बनाई। इसके लिए उन्हें ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी, जो हत्या को दुर्घटना का रूप दे सके। साजिश की कड़ी रंका थाना क्षेत्र के बांदू गांव निवासी पिकअप चालक परवेज अंसारी तक पहुंची। पुलिस के मुताबिक श्रीकांत को वाहन से कुचलकर मारने के लिए एक लाख रुपये में सौदा तय हुआ। मोहम्मद हसन ने परवेज अंसारी को 50 हजार रुपये फोन-पे के जरिए अग्रिम रकम भी दी। बाकी रकम वारदात के बाद देने की बात तय हुई। योजना ऐसी बनाई गई कि श्रीकांत की मौत हो जाए और देखने वालों को यह सामान्य सड़क दुर्घटना लगे। लेकिन साजिश में शामिल लोगों को शायद यह अंदाजा नहीं था कि मोबाइल फोन, कैमरे और तकनीकी जांच उनके बनाए पूरे खेल को पलट देंगे।

मां के शक ने खोला मर्डर का राज

श्रीकांत की मौत के बाद उसकी मां शांति देवी ने अपनी बहू मनीषा पर गंभीर आरोप लगाए। मामला संवेदनशील था और मनीषा का पारिवारिक तथा राजनीतिक संबंध भी पुलिस की नजर में था। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर रंका पुलिस ने विशेष जांच टीम गठित की। इसके बाद जांच सिर्फ घटनास्थल तक सीमित नहीं रही। मोबाइल फोन, कॉल डिटेल, टावर लोकेशन, सीसीटीवी फुटेज और मानवीय सूचना तंत्र को जांच का हिस्सा बनाया गया। यही तकनीकी जांच धीरे-धीरे उस रास्ते तक पहुंची, जहां हादसे के पीछे छिपी साजिश के तार जुड़ते दिखाई देने लगे।

मोबाइल लोकेशन से फंदे में आए आरोपी

पुलिस ने मनीषा और मोहम्मद हसन के बीच संपर्क की पड़ताल की। घटना वाले दिन की गतिविधियों को खंगाला गया। कॉल डिटेल और मोबाइल लोकेशन ने कई ऐसे संकेत दिए, जो सामान्य दुर्घटना की कहानी से मेल नहीं खाते थे। तकनीकी साक्ष्यों में आरोपियों की मौजूदगी घटनास्थल के आसपास पाई गई। इसके बाद पुलिस का शक मजबूत होता गया। पूछताछ का दौर शुरू हुआ और आखिरकार पुलिस ने मनीषा देवी, मोहम्मद हसन और पिकअप चालक परवेज अंसारी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के अनुसार पूछताछ में तीनों ने अपराध स्वीकार किया। मामले में इमरान अंसारी और असराज अंसारी के नाम भी सामने आए हैं। दोनों फिलहाल फरार बताए गए हैं। पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही है। जांच के दौरान घटना में इस्तेमाल पिकअप वाहन, अर्टिगा कार और मोबाइल फोन भी जब्त किए गए हैं। पुलिस इन इलेक्ट्रॉनिक और भौतिक साक्ष्यों की जांच कर रही है।

किताबों में दिखेगा छत्तीसगढ़

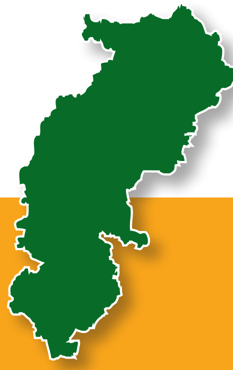

बच्चे पढ़ेंगे अपनी माटी की पूरी कहानी, तीजन बाई से वीर नारायण सिंह तक, लोकजीवन बनेगा पाठ का हिस्सा

स्कूल की किताबों में अब सिर्फ इतिहास की तारीखें, विज्ञान के सिद्धांत और गणित के सवाल नहीं होंगे। छत्तीसगढ़ के बच्चों को अपनी माटी, अपने लोकनायकों, अपनी कला और अपनी परंपराओं से भी रूबरू कराया जाएगा। कक्षा 6वीं से 12वीं तक के विद्यार्थी प्रदेश की उन सांस्कृतिक विरासतों के बारे में पढ़ेंगे, जिन्हें अब तक ज्यादातर घर, गांव और लोक समाज के जरिए ही जाना जाता रहा है। इस नई पहल में पद्मश्री तीजन बाई की पंडवानी से लेकर गुरु घासीदास और शहीद वीर नारायण सिंह जैसे व्यक्तित्वों की कहानी तक शामिल होगी। बच्चों को हरेली, बस्तर दशहरा, तीजा-पोला और छेरछेरा जैसे पर्वों की जानकारी मिलेगी तो पंथी, राउत नाचा, सुवा और नाचा जैसी लोककलाएं भी पाठ्य सामग्री का हिस्सा बनेंगी। खास बात यह है कि छत्तीसगढ़ की संस्कृति सिर्फ पढ़ाई नहीं जाएगी, बल्कि उसे दृश्य माध्यम से भी समझने का मौका विद्यार्थियों को मिलेगा। स्कूल शिक्षा विभाग प्रदेश की कला, संस्कृति, इतिहास और लोकजीवन पर आधारित विशेष पाठ्य एवं दृश्य सामग्री तैयार कर रहा है। राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के शंकर नगर स्थित परिसर में 24 से 26 अगस्त तक तीन दिवसीय आवासीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों से साहित्यकार, विषय विशेषज्ञ, संस्कृतिविद, शोधकर्ता और जनसंचार विशेषज्ञ जुटे। इस पूरी कवायद का मकसद सिर्फ सामग्री तैयार करना नहीं है। कोशिश यह है कि छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पहचान को ऐसी भाषा और प्रस्तुति में बच्चों तक पहुंचाया जाए, जिसे वे आसानी से समझ सकें और अपने आसपास के जीवन से जोड़ सकें।

महान व्यक्तित्वों की कहानी भी पढ़ेंगे बच्चे

नई सामग्री में छत्तीसगढ़ की पहचान बनाने वाले अनेक व्यक्तित्वों को जगह दी जा रही है। गुरु घासीदास, शबरी माता, राजा चक्रधर, तीजन बाई, विनोद कुमार शुक्ल, माधवराव सप्रे, मिनीमाता, सुंदरलाल शर्मा, शहीद वीर नारायण सिंह और गुंडाधुर जैसे नाम विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का हिस्सा बनेंगे। इन व्यक्तित्वों के जीवन और योगदान को केवल परिचय के रूप में नहीं, बल्कि उनके संघर्ष, विचार और समाज पर पड़े प्रभाव के संदर्भ में प्रस्तुत करने की कोशिश होगी। इससे विद्यार्थियों को यह समझने का अवसर मिलेगा कि प्रदेश की पहचान केवल भौगोलिक सीमाओं से नहीं, बल्कि यहां के लोगों और उनके योगदान से भी बनी है।

100 विषयों पर तैयार हो रही सामग्री

कार्यशाला में लगभग 100 विषयों को अलग-अलग विधाओं में बांटकर सामग्री तैयार की गई। करीब 100 कलाविद और लेखक इन विषयों पर काम कर रहे हैं। सामग्री को विद्यार्थियों की उम्र, कक्षा और सीखने की जरूरतों के अनुरूप ढाला जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थानीय संदर्भों और भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा से जोड़ने पर जोर दिया गया है। इसी दिशा में छत्तीसगढ़ अपने संसाधनों और विशेषज्ञों के सहयोग से स्थानीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत पर आधारित पूरक सामग्री तैयार कर रहा है। हर विषय को केवल किताबी अध्याय तक सीमित रखने की योजना नहीं है। संबंधित विषय पर 5 से 10 मिनट की लघु फिल्म के लिए पटकथा भी तैयार की जा रही है। यानी बच्चे किसी लोकनृत्य या लोकनायक के बारे में पढ़ेंगे भी और उसे दृश्य माध्यम से देखकर समझ भी सकेंगे। तीन दिवसीय कार्यशाला में पहले विषयवार सामग्री का प्रस्तुतीकरण और समीक्षा की गई। इसके बाद अलग-अलग समूह बनाकर सामग्री में जरूरी संशोधन और परिमार्जन किया गया। अंतिम प्रारूप तैयार करने के साथ लघु फिल्मों की पटकथा पर भी काम हुआ। पटकथाओं के प्रस्तुतीकरण के बाद उनमें आवश्यक सुधार किए गए और अंतिम संपादन के बाद उन्हें स्वीकृति दी गई। इस तरह लिखित सामग्री के साथ दृश्य माध्यम की तैयारी भी समानांतर रूप से पूरी की गई।

पर्वों से लेकर लोकनृत्य तक पूरा लोकजीवन

छत्तीसगढ़ के पर्व-त्योहार भी इस सांस्कृतिक पाठ्य सामग्री में अपनी जगह बनाएंगे। हरेली, नवाखाई, बस्तर दशहरा, गोंचा पर्व, गौरी-गौरा, छेरछेरा, तीजा-पोला, भोजली और मड़ई जैसे पर्वों के पीछे छिपे सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थ बच्चों को बताए जाएंगे। लोकनृत्य और रंगमंच की बात करें तो पंथी, राउत नाचा, गेड़ी, ककसाड़, गौर, शैला, सुवा, सरहुल, नाचा और पंडवानी पर सामग्री तैयार की जा रही है। लोकसंगीत की दुनिया में कबीर गायन, डंडा, भोजली, देवार, ददरिया, फाग और भरथरी जैसी विधाओं को शामिल किया गया है। साथ ही मांदर, मोहरी, ढोल, बांसुरी, सारंगी, धनकुल और टिमकी जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों की जानकारी भी बच्चों को दी जाएगी। इससे लोककलाओं को केवल मनोरंजन के रूप में नहीं, बल्कि प्रदेश की सामाजिक स्मृति और जीवन शैली के हिस्से के रूप में समझने का अवसर मिलेगा।

सिरपुर, भोरमदेव और मंदिरों से जुड़ेगा इतिहास

छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहरों को भी इस पहल में प्रमुख स्थान दिया गया है। सिरपुर, भोरमदेव, दंतेश्वरी मंदिर, बम्लेश्वरी मंदिर, चंद्रहासिनी मंदिर, रतनपुर का मां महामाया मंदिर और राजिम का राजीव लोचन मंदिर जैसे स्थलों के बारे में विद्यार्थी पढ़ेंगे। इन धरोहरों के माध्यम से बच्चों को प्रदेश की स्थापत्य परंपरा, धार्मिक आस्था और ऐतिहासिक विकास को समझाने की कोशिश होगी। इसके साथ सतनाम पंथ, कबीर पंथ, रामनामी पंथ, घोटुल, मितान-बदना, लमसेना और मानस मंडली जैसी विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं को भी सामग्री में शामिल किया जा रहा है।

डोकरा से ठेठरी-खुरमी तक, संस्कृति का स्वाद भी

छत्तीसगढ़ की पहचान उसकी लोककलाओं और शिल्प में भी बसती है। इसलिए डोकरा कला, टेराकोटा, बांस शिल्प, लौह शिल्प, गोदना और रजवार भित्ति चित्रों को भी पाठ्य सामग्री में स्थान दिया जा रहा है। इतना ही नहीं, प्रदेश की रसोई भी इस सांस्कृतिक पाठ का हिस्सा बनेगी। ठेठरी, खुरमी, फरा-मुठिया, अंगाकर रोटी, चौसेला, बफौरी, चापड़ा चटनी, माड़िया पेज और पपची जैसे पारंपरिक व्यंजनों के बारे में विद्यार्थी जानेंगे। यानी संस्कृति की यह पाठशाला किताब के पन्नों से निकलकर कला, संगीत, त्योहार, शिल्प और भोजन तक पहुंचेगी।

शिक्षा के जरिए अपनी जड़ों से जुड़ेगी नई पीढ़ी

यह पहल केवल पाठ्य सामग्री तैयार करने तक सीमित नहीं है। इसके पीछे बड़ा सवाल यह है कि नई पीढ़ी अपनी ही जमीन की उन कहानियों को कितना जानती है, जो पीढ़ियों से लोक समाज में जीवित हैं। स्कूल के पाठ्यक्रम में स्थानीय संस्कृति को जगह मिलने से बच्चों को अपनी विरासत को करीब से समझने का अवसर मिलेगा। लोकनायक, लोकगीत, नृत्य, पर्व, शिल्प, खान-पान और परंपराएं उनके लिए सिर्फ किताब का विषय नहीं रहेंगी, बल्कि अपने आसपास दिखाई देने वाली जीवंत संस्कृति से उनका रिश्ता बनेगा। यही इस आर्ट रिपोजिटरी की सबसे बड़ी अहमियत है। शिक्षा व्यवस्था के जरिए छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक स्मृतियों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने की कोशिश अब एक व्यवस्थित रूप ले रही है। इससे बच्चों में अपनी विरासत को लेकर समझ और गौरव की भावना विकसित होने के साथ उसके संरक्षण और संवर्धन की जिम्मेदारी का बोध भी पैदा हो सकता है।

93 करोड़ 91 लाख 98 हजार के विकास कार्यों का भूमिपूजन

डिप्टी सीएम अरुण साव ने जशपुर कम्युनिटी हॉल में 93 करोड़ 91 लाख 98 हजार रुपए के विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। इनमें अमृत मिशन 2.0 के तहत 86 करोड़ 99 लाख 21 हजार रुपए की पेयजल योजना और स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) 2.0 के अंतर्गत 6 करोड़ 92 लाख 77 हजार रुपए लागत के एसटीपी का निर्माण शामिल हैं। उन्होंने कार्यक्रम में जशपुर नगर के विकास के लिए 4 करोड़ 68 लाख रुपए के नए कार्यों की भी घोषणा की। इनमें जशपुर नगर पालिका कार्यालय के सामने शॉपिंग कॉम्पलेक्स के निर्माण के लिए एक करोड़ 40 लाख रुपए, देशपांडे पार्क एवं तालाब सौंदर्यीकरण के लिए डेढ़ करोड़ रुपए, मटन मार्केट के लिए एक करोड़ 48 लाख रुपए और शव वाहन के लिए 30 लाख रुपए की राशि शामिल है।

नेताम ने किया कन्या छात्रावास का निरीक्षण

छत्तीसगढ़ के आदिम जाति विकास मंत्री रामविचार नेताम ने महासमुंद जिला में आदिवासी छात्रावासों और कन्या आश्रमों का औचक निरीक्षण किया है। उन्होंने छात्रावास परिसरों में साफ-सफाई, भोजन की गुणवत्ता, सुरक्षा और पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं की जांच की। उन्होंने छात्राओं से सीधे संवाद किया और उनके स्वास्थ्य, पढ़ाई, करियर, रहन-सहन तथा छात्रावास में उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। इस दौरान स्थानीय विधायक योगेश्वर राजू सिन्हा भी मौजूद थे। उन्होंने कहा कि छात्रावास में रहने वाली छात्राओं को पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराना शासन की प्राथमिकता है। छात्राएं अपने लक्ष्य निर्धारित कर पूरी मेहनत और लगन के साथ आगे बढ़ें तथा उपलब्ध शैक्षणिक संसाधनों का बेहतर उपयोग करें।

बस्तर के दलपत सागर का होगा कायाकल्प

जगदलपुर की ऐतिहासिक पहचान दलपत सागर के संरक्षण और सौंदर्यीकरण को नई गति मिली है। जगदलपुर नगर निगम और एनएमडीसी नगरनार के बीच हुए एमओयू के तहत CSR मद से ₹50 लाख की राशि स्वीकृत की गई है, जिसमें से प्रथम

चरण के लिए ₹20 लाख जारी कर दिए गए हैं। दलपत सागर में लंबे समय से फैली जलकुंभी को हटाकर व्यापक सफाई और संरक्षण कार्य किए जाएंगे। इससे सरोवर का प्राकृतिक एवं आकर्षक स्वरूप लौटेगा और बस्तर में पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण तथा नागरिक सुविधाओं को भी बढ़ावा मिलेगा। सुशासन सरकार में बस्तर की ऐतिहासिक विरासतों का संरक्षण, प्रकृति का संवर्धन और विकास का संकल्प निरंतर साकार हो रहा है।

रायपुर के नंदनवन का 50 करोड़ से होगा कायाकल्प

रायपुर जिले के अटारी गांव स्थित नंदनवन को अब एक नए और आकर्षक स्वरूप में पुनर्विकसित किया जाएगा। मंत्रालय महानदी भवन में आयोजित एक उच्चस्तरीय बैठक के दौरान वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के अधिकारियों ने मुख्य सचिव विकासशील के समक्ष नंदनवन पुनर्विकास की प्रस्तावित परियोजना का प्रस्तुतिकरण दिया।नंदनवन के कायाकल्प और विकास कार्य में लगभग 50 करोड़ रुपये का निवेश अनुमानित है। पब्लिक प्राईवेट पार्टनरशिप (च्च्च्) मॉडल के तहत यह पूरी परियोजना पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (च्च्च्) मॉडल पर आधारित होगी। बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए बॉटनिकल गार्डन को नए सिरे से पुनर्जीवित और विकसित किया जाएगा। मुख्य सचिव ने परियोजना में पर्यटकों की सुविधा और आकर्षण को ध्यान में रखते हुए विभिन्न जन-सुविधाएं विकसित करने के कड़े निर्देश दिए हैं।

0000 00

भारत सरकार के खान मंत्रालय द्वारा आयोजित क्रिटिकल एवं स्ट्रेटेजिक मिनरल ब्लॉक्स की नीलामी की आठवीं किश्त के रोड शो का आयोजन किया गया। नवा रायपुर स्थित मेफेयर लेक रिजॉर्ट में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि क्रिटिकल एवं स्ट्रेटेजिक मिनरल्स आने वाले समय में देश की आर्थिक प्रगति, तकनीकी आत्मनिर्भरता और सामरिक सुरक्षा के प्रमुख आधार होंगे। आज के तेजी से बदलते वैश्विक और तकनीकी परिदृश्य में इन खनिजों का महत्व बहुत आगे बढ़ चुका है। मुख्यमंत्री ने ई-रेत संगवारी पोर्टल और टिन पोर्टल का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ खनिज विकास निगम (सीएमडीसी) द्वारा इंडियन ओवरसीज बैंक तथा पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के साथ महत्वपूर्ण एमओयू भी किए गए।खनिज विभाग के सचिव पी. दयानंद ने कहा कि राज्य सरकार खनिज संपदा के सतत उपयोग, वैज्ञानिक अन्वेषण, पारदर्शी नीलामी और निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने की दिशा में लगातार कदम उठा रही है।

महतारी गौरव वर्ष में मातृशक्ति का सम्मान

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय अटल बिहारी वाजपेयी सभागृह में छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग द्वारा आयोजित 'नारी शक्ति सम्मान समारोह' में शामिल हुए। विष्णुदेव साय ने इस अवसर पर चिकित्सा, शिक्षा, खेल, साइबर सुरक्षा, पत्रकारिता, कला एवं संस्कृति, कृषि, महिला उद्यमिता, सामाजिक सेवा और महिला सुरक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली महिलाओं को सम्मानित किया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने सम्मानित महिलाओं को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इन महिलाओं ने अपने परिश्रम, प्रतिभा, साहस और संकल्प से अलग-अलग क्षेत्रों में विशिष्ट पहचान बनाई है। मुख्यमंत्री ने छत्तीसगढ़ राज्य महिला आयोग की नवनियुक्त अध्यक्ष डॉ. ममता साहू को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्हें अत्यंत महत्वपूर्ण और संवेदनशील जिम्मेदारी मिली है। उनका सामाजिक एवं सार्वजनिक जीवन का अनुभव, कानून की समझ और उच्च शिक्षा इस दायित्व के निर्वहन में उपयोगी सिद्ध होगी।

7 नवनिर्मित सामुदायिक भवनों का लोकार्पण

नगर पालिक निगम कोरबा के दर्री जोन अंतर्गत 7 नवनिर्मित सामुदायिक भवनों का लोकार्पण एक ही दिन पृथक-पृथक वार्डों में किया गया। प्रदेश के उद्योग, वाणिज्य, श्रम, आबकारी व सार्वजनिक उपक्रम मंत्री लखनलाल देवांगन के मुख्य आतिथ्य एवं महापौर श्रीमती संजू देवी

राजपूत की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रमों के दौरान इन सभी सामुदायिक भवनों को जनता की सेवा में समर्पित किया गया। इस अवसर पर समाज के लोगों ने सामुदायिक भवनों की सौगात के लिए उद्योग मंत्री और महापौर के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उद्योग मंत्री लखनलाल देवांगन ने कहा कि जनताजनार्दन को अधिक से अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराना और उनकी विकास संबंधी समस्याओं का त्वरित समाधान करना मेरा प्रथम लक्ष्य है। इसी लक्ष्य को सामने रखकर निगम क्षेत्र में लगातार विकास कार्य कराए जा रहे हैं।

खरसिया में निर्माणाधीन रोड ओवर ब्रिज का निरीक्षण

वित्त मंत्री एवं रायगढ़ विधायक ओपी चौधरी ने रायगढ़ जिले के खरसिया में निर्माणाधीन रोड ओवर ब्रिज का निरीक्षण किया। उन्होंने मौके पर पहुंचकर निर्माण कार्य की प्रगति का जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों से कार्य की वर्तमान स्थिति की जानकारी ली। वित्त मंत्री ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता, प्रगति और निर्धारित समय-सीमा को लेकर अधिकारियों से चर्चा की। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के लोगों की सुविधा और आवागमन को सुगम बनाने की दिशा में रोड ओवर ब्रिज का निर्माण महत्वपूर्ण है। इसके पूर्ण होने से यातायात व्यवस्था बेहतर होगी तथा रेलवे क्रॉसिंग पर लगने वाले जाम से लोगों को राहत मिलेगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्य में गुणवत्ता के मानकों का पूरी तरह पालन सुनिश्चित किया जाए और कार्य को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करने के लिए आवश्यक गति से आगे बढ़ाया जाए।

स्वास्थ्य मंत्री ने किया दृश्य संवाद 2026 का शुभारंभ

स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने विश्व फोटोग्राफी दिवस के अवसर पर रायपुर प्रेस क्लब द्वारा आयोजित तीन दिवसीय फोटो जर्नलिस्ट फेस्ट 'दृश्य संवाद 2026' का शुभारंभ किया। प्रदर्शनी में रायपुर के प्रेस फोटो जर्नलिस्टों के साथ-साथ प्रोफेशनल और शौकिया फोटोग्राफरों की तस्वीरें प्रदर्शित की गई। चार कैटेगरी में आयोजित प्रदर्शनी की 'प्रकृति एवं पर्यावरण' कैटेगरी में प्रदर्शित तस्वीरों ने प्रदर्शनी स्थल पर प्राकृतिक सौंदर्य को साकार कर दिया। 'समाचार एवं जनसरोकार' कैटेगरी में फोटो जर्नलिस्टों की नजर से महत्वपूर्ण घटनाओं और सामाजिक सरोकारों को एक क्लिक में जीवंत रूप दिया गया। रायपुर प्रेस क्लब ने प्रदर्शनी को और व्यापक स्वरूप देते हुए प्रेस क्लब के गैर सदस्य प्रोफेशनल और शौकिया फोटोग्राफरों के लिए भी ओपन कैटेगरी में भागीदारी का अवसर दिया। इस श्रेणी में 35 से अधिक प्रतिभागियों की तस्वीरें प्रदर्शित की गई हैं।

खेल इतिहास और खिलाड़ियों की उपलब्धियों को मिला नया मंच

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर रायपुर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में राज्य खेल अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें छत्तीसगढ़ के गौरवशाली खेल इतिहास और खिलाड़ियों की उपलब्धियों पर केंद्रित फोटो प्रदर्शनी का अवलोकन किया और कॉफी टेबल बुक 'हमारे खिलाड़ी' का विमोचन किया गया। इस मौके पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने फोटो प्रदर्शनी में प्रदर्शित छत्तीसगढ़ की खेल विभूतियों के जीवन, संघर्ष, उपलब्धियों और खेल जगत में उनके योगदान से संबंधित छायाचित्रों एवं जानकारियों का अवलोकन किया। उन्होंने प्रदेश के खेल इतिहास और खिलाड़ियों की उपलब्धियों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने की इस पहल की सराहना की। इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री तोखन साहू, उपमुख्यमंत्री अरुण साव, संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल, तकनीकी शिक्षा मंत्री खुशवंत साहेब, सांसद बृजमोहन अग्रवाल, विजय बघेल, विधायक पुरंदर मिश्रा, मोतीलाल साहू और सुनील सोनी उपस्थित थे।

171 प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान

कवर्धा में आयोजित मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह में उप मुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक विजय शर्मा ने कक्षा 10वीं एवं 12वीं में 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन राशि के चेक एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। इस मौके पर डिप्टी सीएम विजय शर्मा ने विद्यार्थियों से आत्मीयता के साथ सीधा संवाद किया। उन्होंने बच्चों के साथ समय बिताया, उनकी पढ़ाई और रुचियों के बारे में जाना तथा उनके सवालों और जिज्ञासाओं पर चर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरक पुस्तकें भी भेंट कीं, ताकि उनमें पढ़ने और सीखने की आदत को और बढ़ावा मिले। विजय शर्मा की पहल पर आयोजित इस समारोह में मेधावी विद्यार्थियों के साथ उनकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले स्कूल के प्राचार्य व शाला प्रबंधन समिति के अध्यक्ष को भी सम्मानित किया गया।

तीजा तिहार

मायके की ममता, शिव-पार्वती की आस्था और छत्तीसगढ़ी संस्कृति का सबसे खूबसूरत रंग

छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में कुछ त्योहार केवल कैलेंडर की तारीख नहीं होते, वे रिश्तों की गर्माहट, स्मृतियों की खुशबू और पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं का जीवंत दस्तावेज होते हैं। तीजा तिहार ऐसा ही पर्व है। भादो की उमस, खेतों में हरियाली और गांव-गांव में गूंजते लोकगीतों के बीच जब तीजा आता है तो छत्तीसगढ़ के घर-आंगन का माहौल ही बदल जाता है। यह पर्व खास तौर पर महिलाओं के लिए आस्था, व्रत, श्रृंगार और मायके से जुड़ी भावनाओं का अनूठा संगम है। सुहागिन महिलाएं शिव-पार्वती की पूजा कर पति की दीर्घायु और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। लेकिन तीजा की कहानी केवल व्रत और पूजा तक सीमित नहीं है। इसके भीतर मायके की याद, भाई-बहन का रिश्ता, सहेलियों का मिलन और छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति की पूरी तस्वीर दिखाई देती है।

छत्तीसगढ़ में तीजा की असली खूबसूरती शायद इसी में है कि यहां धर्म और लोकजीवन एक-दूसरे से अलग नहीं हैं। शिव-पार्वती की पूजा में आस्था है तो मायके की चौखट पर लौटती बेटी में भावनाओं की पूरी दुनिया है। निर्जला व्रत में संकल्प है तो लोकगीतों में मन की आजादी। इसीलिए तीजा को केवल सुहाग का पर्व कहना भी पर्याप्त नहीं होगा। यह नारी की आस्था, परिवार के स्नेह, मायके की ममता और छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति का साझा उत्सव है। भादो की इस तीज में जब किसी गांव के आंगन से तीजा का गीत उठता है, तो उसमें सिर्फ एक त्योहार की आवाज नहीं होती। उसमें कई पीढ़ियों की स्मृतियां, मां की सीख, भाई का प्यार, बेटी की विदाई और मायके लौटने की खुशी एक साथ बोलती है। यही तीजा की ताकत है—समय बदलता है, समाज बदलता है, लेकिन रिश्तों की वह डोर नहीं बदलती, जिसे यह पर्व हर साल फिर से मजबूत कर देता है।

तीजा यानी मायके लौटने की खुशी

छत्तीसगढ़ी समाज में तीजा का सबसे भावुक पक्ष है मायका। विवाह के बाद बेटी के लिए मायका सिर्फ एक घर नहीं रह जाता, वह उसकी स्मृतियों और अपनत्व की दुनिया बन जाता है। तीजा पर भाई या मायके वाले बहन-बेटी को लेने जाते हैं। यही वजह है कि तीजा के आने से पहले ही विवाहित बेटियां मायके जाने की तैयारी करने लगती हैं। इसी परंपरा में तीजा एक ऐसा अवसर बन जाता है, जब विवाह के बाद जिम्मेदारियों में बंधी बेटी कुछ दिनों के लिए फिर अपने बचपन के संसार में लौटती है। सहेलियों से मिलना, भाई के साथ हंसी-मजाक, मां के हाथ का खाना और आंगन में बैठकर पुरानी बातें करना—इन सबका अपना भावनात्मक महत्व है। यही कारण है कि छत्तीसगढ़ में तीजा को केवल धार्मिक पर्व कहना इसकी व्यापकता को छोटा कर देना होगा। यह रिश्तों की मरम्मत और स्मृतियों की वापसी का पर्व भी है।

करू भात से शुरू होती है तीज की तैयारी

छत्तीसगढ़ी तीजा की परंपरा में व्रत से पहले का समय भी खास महत्व रखता है। लोकपरंपरा के अनुसार तीजा के तीन दिनों की प्रक्रिया में पहले दिन करू भात की परंपरा निभाई जाती है। इसके बाद व्रत का दिन आता है, जब तीजहारिन महिलाएं निर्जला व्रत रखती हैं। व्रत के दौरान महिलाएं पारंपरिक परिधान पहनती हैं, श्रृंगार करती हैं और सामूहिक रूप से पूजा में शामिल होती हैं। शाम होते-होते कई घरों में पूजा की तैयारी शुरू हो जाती है। मिट्टी या बालू से शिव-पार्वती का स्वरूप तैयार किया जाता है। फूलों से सजावट होती है और फिर पूजा के साथ तीजा की कथा सुनी जाती है। यहां धर्म और लोकजीवन अलग-अलग दिखाई नहीं देते। पूजा के साथ गीत हैं, गीतों के साथ स्मृतियां हैं और स्मृतियों के साथ रिश्तों की एक पूरी दुनिया है।

शिव-पार्वती की आराधना से जुड़ी आस्था

तीजा की धार्मिक परंपरा भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना से जुड़ी है। लोकमान्यता के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तप और व्रत किया था। इसी आस्था से तीजा के व्रत को जोड़ा जाता है। विवाहित महिलाएं पति की दीर्घायु, अखंड सौभाग्य और परिवार की खुशहाली की कामना के साथ व्रत रखती हैं। कई स्थानों पर महिलाएं शिव-पार्वती की प्रतिमा या मिट्टी से निर्मित स्वरूप की पूजा करती हैं और तीजा की कथा सुनती हैं। छत्तीसगढ़ की लोकपरंपरा में इस पूजा का स्वरूप स्थानीय रीति-रिवाजों के साथ और भी विशिष्ट हो जाता है।

दिखता है छत्तीसगढ़ का लोक सौंदर्य

तीजा आते ही महिलाएं पारंपरिक साड़ियों और आभूषणों में सजती हैं। हाथों में चूड़ियां, मेहंदी और चेहरे पर त्योहार की चमक दिखाई देती है। कई स्थानों पर झूले पड़ते हैं और लोकगीतों के बीच महिलाएं उत्सव मनाती हैं। आज शहरों में तीजा का स्वरूप बदला है। सामूहिक तीज मिलन कार्यक्रम, सांस्कृतिक आयोजन और सार्वजनिक समारोहों ने इसे नई पहचान दी है। लेकिन मूल भावना अभी भी वही है—आस्था के साथ मिलना और रिश्तों को फिर से महसूस करना। छत्तीसगढ़ सरकार के आयोजनों में भी तीजा को प्रदेश की लोकसंस्कृति के महत्वपूर्ण पर्व के रूप में स्थान मिलता रहा है। सार्वजनिक तीज मिलन कार्यक्रमों में पारंपरिक वेशभूषा, लोकगीत, नृत्य और छत्तीसगढ़ी व्यंजनों के जरिए इस संस्कृति को सामने लाया जाता है। तीजा के अवसर पर महिलाओं के सामूहिक लोकगीत इस पर्व की सबसे खूबसूरत पहचान हैं। गांवों में महिलाएं एक-दूसरे के घर जाती हैं, गीत गाती हैं और तीजा की खुशियां साझा करती हैं। इन गीतों में शिव-पार्वती की कथा के साथ-साथ मायके की याद, भाई का स्नेह, ससुराल का जीवन और मन की छोटी-बड़ी भावनाएं भी अभिव्यक्त होती हैं। यही लोकगीत तीजा को महज धार्मिक अनुष्ठान से निकालकर एक सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव बना देते हैं। आज जब परिवार छोटे हो रहे हैं और जीवन की रफ्तार लगातार तेज होती जा रही है, तब ऐसे त्योहार रिश्तों के लिए एक जरूरी विराम की तरह सामने आते हैं।

व्रत के बाद स्वाद में घुलती परंपरा

तीजा की एक और खासियत इसके पारंपरिक पकवान हैं। व्रत के बाद पारण के अवसर पर घरों में तरह-तरह के छत्तीसगढ़ी व्यंजन बनाए जाते हैं। ठेठरी, खुर्मी, पुड़ी, बड़ा, सोहारी, चोसेला, पिठिया और गुलगुला भजिया जैसे पकवान इस पर्व के पारंपरिक स्वाद का हिस्सा रहे हैं। कई जगह कढ़ी, तसमई और दूसरे स्थानीय व्यंजन भी बनाए जाते हैं। इन पकवानों का महत्व केवल स्वाद तक नहीं है। इनके साथ परिवार की रसोई, मां के हाथ का स्वाद और पीढ़ियों से चली आ रही पाक परंपरा जुड़ी हुई है। समय बदला है। गांव बदल रहे हैं, शहर फैल रहे हैं, परिवारों की संरचना बदल रही है और महिलाओं की सामाजिक भूमिका भी पहले से कहीं व्यापक हुई है। आज तीजा मनाने वाली महिलाएं सिर्फ घर-परिवार तक सीमित नहीं हैं। वे राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, कारोबार, कला, खेल और सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। फिर भी तीजा की आत्मा वही है। वह बेटी को मायके से जोड़ता है। वह भाई को बहन की याद दिलाता है। वह परिवार को एक साथ बैठने का बहाना देता है। वह लोकगीतों को अगली पीढ़ी तक पहुंचाता है। और सबसे बढ़कर, वह यह याद दिलाता है कि आधुनिकता की रफ्तार के बीच अपनी जड़ों को बचाए रखना भी जरूरी है।

क्यों जरूरी है आरक्षण पर बहस?

सामाजिक न्याय, राजनीति और बदलते भारत के बीच फंसा सवाल

आरक्षण खत्म करने की नहीं, उसकी समीक्षा और प्रभावी पुनर्संरचना की जरूरत

भारत में आरक्षण पर बहस शायद ही कभी केवल नीति की बहस रहती है। यह सामाजिक न्याय, प्रतिनिधित्व, अवसर, राजनीति और चुनावी गणित से जुड़ जाती है। यही वजह है कि आरक्षण व्यवस्था को लेकर कोई भी सवाल तुरंत राजनीतिक बहस का रूप ले लेता है। एक पक्ष इसे ऐतिहासिक सामाजिक विषमता को दूर करने का जरूरी माध्यम मानता है, तो दूसरा पक्ष अवसरों के वितरण और व्यवस्था की मौजूदा संरचना पर सवाल उठाता है। लेकिन लोकतंत्र में किसी व्यवस्था की उपयोगिता पर सवाल उठाना उसे समाप्त करने की मांग के बराबर नहीं होता। आरक्षण पर भी यही फर्क समझने की जरूरत है। आरक्षण खत्म हो या नहीं, उससे पहले यह सवाल जरूर पूछा जाना चाहिए कि जिस उद्देश्य के लिए इसे बनाया गया था, वह उद्देश्य किस हद तक पूरा हुआ है। भारतीय संविधान में सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों तथा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए विशेष प्रावधानों का संवैधानिक आधार मौजूद है। अनुच्छेद 15 और 16 राज्य को पिछड़े वर्गों के लिए विशेष प्रावधान और सार्वजनिक रोजगार में आरक्षण की व्यवस्था करने की शक्ति देते हैं। वहीं अनुच्छेद 340 सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों की स्थिति की जांच के लिए आयोग गठित करने का प्रावधान करता है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की पहचान का संवैधानिक आधार अनुच्छेद 341 और 342 में है। यह समझना भी जरूरी है कि आरक्षण को संविधान में मूल रूप से केवल दस साल के लिए सीमित किया गया था, यह बात राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए लोकसभा और विधानसभाओं में SC/ST सीटों के आरक्षण के संदर्भ में थी। इसे सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में लागू आरक्षण पर सीधे लागू करना तथ्यात्मक रूप से सही नहीं होगा। यानी आरक्षण की पूरी संवैधानिक व्यवस्था को एक ही समयसीमा में बांधना उचित नहीं है।

क्या सात दशक बाद समीक्षा नहीं होनी चाहिए?

आरक्षण की जरूरत को नकारना भारतीय समाज की ऐतिहासिक वास्तविकताओं को नकारना होगा। सदियों की सामाजिक असमानता और भेदभाव ने कुछ समुदायों को शिक्षा, संपत्ति, रोजगार और सत्ता की मुख्यधारा से लंबे समय तक दूर रखा। इसलिए समान अवसर पैदा करने के लिए विशेष प्रावधानों की जरूरत को संविधान ने स्वीकार किया। लेकिन किसी भी सार्वजनिक नीति की तरह आरक्षण व्यवस्था भी स्थिर नहीं रह सकती। समाज बदलता है, शिक्षा का विस्तार होता है, आर्थिक स्थितियां बदलती हैं और पिछड़ेपन की प्रकृति भी बदल सकती है। इसलिए सवाल यह नहीं होना चाहिए कि आरक्षण क्यों है। बड़ा सवाल यह है कि आरक्षण का लाभ किन लोगों तक पहुंच रहा है और क्या उसके भीतर मौजूद असमानताओं को पहचानने की कोई प्रभावी व्यवस्था है? यही वह बिंदु है जहां क्रीमी लेयर की बहस महत्वपूर्ण हो जाती है। आरक्षण को लेकर भारत के सामने दो अतिवादी रास्ते हैं। एक रास्ता कहता है कि इसमें किसी तरह का बदलाव नहीं होना चाहिए। दूसरा रास्ता इसे पूरी तरह खत्म करने की बात करता है। लेकिन संभवतः वास्तविक समाधान इन दोनों के बीच मौजूद है। आरक्षण को समाप्त करने की जल्दबाजी भी गलत होगी और उसकी कमियों पर सवाल उठाने से इनकार करना भी। सामाजिक न्याय का मतलब केवल सीटों का बंटवारा नहीं है। उसका अंतिम लक्ष्य ऐसा समाज बनाना है, जहां किसी बच्चे का भविष्य उसके जन्म से तय न हो। इसलिए बहस आरक्षण बनाम मेरिट की नहीं, बल्कि समान अवसर बनाम असमान शुरुआती स्थितियों की होनी चाहिए। सामान्य वर्ग का गरीब युवा भी इस देश का नागरिक है और ऐतिहासिक रूप से वंचित समुदाय का युवा भी। दोनों की पीड़ा वास्तविक हो सकती है। लोकतंत्र की परीक्षा यही है कि वह एक की पीड़ा को दूसरे के खिलाफ हथियार बनाए बिना दोनों के लिए अवसर बढ़ाए। आरक्षण पर सबसे जरूरी सवाल शायद यही है कि क्या हम आरक्षण की राजनीति से आगे बढ़कर अवसरों की राजनीति कर सकते हैं?

क्यों उठती है क्रीमी लेयर की बहस?

अन्य पिछड़ा वर्ग यानी ओबीसी आरक्षण में क्रीमी लेयर की अवधारणा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के अपेक्षाकृत संपन्न और आगे निकल चुके तबके को आरक्षण का लाभ लगातार मिलता न रहे और वास्तविक रूप से जरूरतमंद लोगों के लिए अवसर उपलब्ध रहें। लेकिन इस अवधारणा को अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के आरक्षण पर उसी रूप में लागू करना अलग कानूनी और सामाजिक प्रश्न है। सर्वोच्च न्यायालय ने इन वर्गों के भीतर क्रीमी लेयर को लेकर हाल के वर्षों में महत्वपूर्ण टिप्पणियां और निर्देश दिए हैं, जिसके बाद यह बहस और तेज हुई है। यहीं सावधानी जरूरी है। किसी एक समुदाय या वर्ग के कुछ सफल परिवारों को देखकर यह निष्कर्ष निकाल देना कि पूरा वर्ग सामाजिक पिछड़ेपन से बाहर निकल चुका है, उतना ही गलत होगा जितना यह मान लेना कि आरक्षण पाने वाला हर व्यक्ति समान रूप से वंचित है। नीति की असली चुनौती इसी अंतर को पहचानना है।

आर्थिक कमजोरी को भी मिले पर्याप्त महत्व?

आरक्षण की बहस में एक दूसरा महत्वपूर्ण सवाल आर्थिक स्थिति का है। सामान्य वर्ग में भी बड़ी संख्या में ऐसे परिवार हैं, जिनके पास आर्थिक संसाधन सीमित हैं। गरीब परिवार का बच्चा चाहे किसी भी सामाजिक समूह से आता हो, उसकी शिक्षा और रोजगार के अवसर संपन्न परिवार के बच्चे से अलग हो सकते हैं। इसी पृष्ठभूमि में 103वें संविधान संशोधन के जरिए आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग यानी ईडब्ल्यूएस के लिए शिक्षा और सरकारी नौकरियों में 10 प्रतिशत तक आरक्षण का प्रावधान किया गया। सर्वोच्च न्यायालय ने 2022 में इसकी संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा। इससे एक बात स्पष्ट होती है कि भारतीय आरक्षण व्यवस्था अब केवल सामाजिक पिछड़ेपन की बहस तक सीमित नहीं है। आर्थिक कमजोरी भी नीति विमर्श का हिस्सा बन चुकी है। फिर भी सवाल कायम है कि क्या आर्थिक स्थिति को सामाजिक पिछड़ेपन का विकल्प मान लिया जाए या दोनों को अलग-अलग आधार के रूप में समझा जाए? इसका उत्तर सरल नहीं है, क्योंकि गरीबी और सामाजिक भेदभाव एक ही चीज नहीं हैं।

जंतर-मंतर की आवाज को भी सुनना होगा

आरक्षण पर नई पीढ़ी की बेचैनी को नजरअंदाज करना भी ठीक नहीं होगा। सामान्य वर्ग के ऐसे युवा, जो प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छे अंक हासिल करने के बावजूद सीमित सामान्य सीटों के कारण चयन से बाहर रह जाते हैं, उनके भीतर असंतोष पैदा होना स्वाभाविक है। लेकिन दूसरी तरफ आरक्षित वर्गों के युवा भी यह सवाल उठा सकते हैं कि केवल अंक और आर्थिक स्थिति सामाजिक बराबरी की पूरी तस्वीर नहीं बताते। इसलिए समाधान किसी एक वर्ग की शिकायत को दूसरे वर्ग के खिलाफ खड़ा करना नहीं है। प्रतिस्पर्धा को शून्य-योग खेल बनाने के बजाय अवसरों का विस्तार करना होगा। अगर सरकारी नौकरियों की संख्या सीमित होती जाएगी, शिक्षा की गुणवत्ता असमान रहेगी और निजी क्षेत्र पर्याप्त रोजगार पैदा नहीं करेगा, तो आरक्षण पर तनाव बढ़ता ही जाएगा। तब समस्या केवल आरक्षण नहीं होगी, बल्कि अवसरों की कमी होगी। आरक्षण पर बहस जितनी जरूरी है, उतना ही जरूरी यह समझना भी है कि केवल आरक्षण सामाजिक न्याय का पूरा समाधान नहीं है। सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता बेहतर हो, गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, उच्च शिक्षा सस्ती और गुणवत्तापूर्ण हो, प्रतियोगी परीक्षाओं की प्रक्रिया पारदर्शी हो, निजी क्षेत्र में पर्याप्त रोजगार पैदा हों और कौशल आधारित शिक्षा का विस्तार हो—इन कदमों के बिना आरक्षण पर होने वाली बहस अधूरी रहेगी। अगर एक तरफ हजारों युवा सीमित सरकारी पदों के लिए संघर्ष कर रहे हों और दूसरी तरफ अर्थव्यवस्था पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण रोजगार न पैदा कर रही हो, तो आरक्षण की हिस्सेदारी पर विवाद होना स्वाभाविक है।

राजनीति ने बहस को और कठिन बनाया

आरक्षण भारतीय राजनीति का बेहद संवेदनशील मुद्दा है। चुनावी राजनीति में कोई भी दल इसके खिलाफ स्पष्ट रुख अपनाने से पहले कई बार सोचता है, क्योंकि आरक्षण से जुड़े समुदाय देश की बड़ी आबादी का हिस्सा हैं। इसी वजह से आरक्षण की आलोचना को कई बार सीधे संविधान विरोध या सामाजिक न्याय विरोध के रूप में पेश कर दिया जाता है। दूसरी ओर, आरक्षण में किसी सुधार की मांग को भी कई बार ऐसे प्रस्तुत किया जाता है मानो पूरी व्यवस्था खत्म करने की कोशिश हो। दोनों अतियां बहस को नुकसान पहुंचाती हैं। किसी व्यवस्था की समीक्षा करना और उसे खत्म करना दो अलग बातें हैं। संविधान में संशोधन की व्यवस्था स्वयं इस बात का प्रमाण है कि संवैधानिक लोकतंत्र बदलती परिस्थितियों के अनुरूप संस्थागत सुधार की गुंजाइश रखता है। भारत जैसे विविध और असमान समाज में आरक्षण की भूमिका अभी खत्म नहीं हुई है। लेकिन आरक्षण को हमेशा के लिए अपरिवर्तनीय व्यवस्था मान लेना भी व्यावहारिक दृष्टि नहीं होगी। जरूरत इस बात की है कि समय-समय पर आंकड़ों के आधार पर मूल्यांकन हो। कौन से वर्ग अब भी सबसे पीछे हैं? किन क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व की कमी है? आरक्षण का लाभ किन समूहों में केंद्रित है? शिक्षा और रोजगार में वास्तविक बाधाएं क्या हैं? इन सवालों पर गंभीर अध्ययन होना चाहिए। साथ ही यह भी देखना होगा कि आरक्षण की बहस कहीं रोजगार की कमी, शिक्षा की गिरती गुणवत्ता और आर्थिक अवसरों के अभाव जैसे बड़े मुद्दों को ढक तो नहीं रही।

दर्द गया, इलाज नहीं

फिजियोथेरेपी बीच में छोड़ना कितना सही?

तकलीफ खत्म होते ही एक्सरसाइज बंद कर देना रिकवरी को अधूरा छोड़ सकता है

दर्द शरीर का वह अलार्म है, जो हमें बताता है कि कहीं कुछ ठीक नहीं चल रहा। चोट लगी हो, मांसपेशियों पर ज्यादा दबाव पड़ा हो, जोड़ों में जकड़न हो या गलत मुद्रा के कारण शरीर का कोई हिस्सा प्रभावित हो रहा हो, दर्द अक्सर सबसे पहले संकेत देता है। यही वजह है कि जब दर्द कम होता है तो व्यक्ति को लगता है कि समस्या भी खत्म हो गई। राहत मिलते ही दवा बंद, एक्सरसाइज बंद और फिजियोथेरेपी भी बंद। लेकिन क्या दर्द का चले जाना वास्तव में पूरी तरह ठीक हो जाने का प्रमाण है? कई मस्कुलोस्केलेटल समस्याओं में दर्द कम होना रिकवरी की मंजिल नहीं, बल्कि अगले चरण में पहुंचने का संकेत हो सकता है। जिस वजह से समस्या पैदा हुई थी, उसका असर शरीर के भीतर कुछ समय तक बना रह सकता है। मांसपेशियों की ताकत कम हो सकती है, जोड़ों की गति पहले जैसी नहीं रही हो सकती है, शरीर का संतुलन बिगड़ा हो सकता है या चलने-बैठने और उठने के तरीके में बदलाव आ सकता है। यही वह जगह है, जहां फिजियोथेरेपी की भूमिका सिर्फ दर्द मिटाने से आगे बढ़ जाती है। डॉ. विक्रम द्विवेदी के मुताबिक फिजियोथेरेपी को लेकर सबसे आम धारणा यही है कि यह दर्द कम करने की प्रक्रिया है। दर्द गया तो इलाज पूरा। लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार इसका उद्देश्य इससे कहीं व्यापक है। शुरुआती उपचार के दौरान दर्द और सूजन कम हो सकती है। आराम, दवाओं और फिजियोथेरेपी से व्यक्ति को काफी राहत भी मिल सकती है। लेकिन शरीर को अपनी पुरानी क्षमता हासिल करने में उससे ज्यादा समय लग सकता है।

मसलन, कमर दर्द का उदाहरण लें। दर्द कम होने के बाद व्यक्ति सामान्य गतिविधियों में लौट सकता है, लेकिन कमर और पेट के आसपास की मुख्य मांसपेशियों की ताकत अभी पूरी तरह वापस नहीं आई हो सकती। इसी तरह घुटने की चोट के बाद दर्द खत्म हो जाने पर भी पैर की मांसपेशियों की शक्ति, लचीलापन और संतुलन सामान्य होने में समय लग सकता है। यदि इस अवस्था में व्यक्ति अचानक पहले जैसी गतिविधियां शुरू कर देता है तो कमजोर मांसपेशियों और गलत मूवमेंट पैटर्न पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है।

शरीर को दोबारा तैयार करती है फिजियोथेरेपी

डॉ. विक्रम द्विवेदी कहते हैं कि फिजियोथेरेपी का असली लक्ष्य शरीर को केवल दर्द से राहत दिलाना नहीं, बल्कि उसे दोबारा सही तरीके से काम करने के लिए तैयार करना है। उपचार के दौरान व्यक्ति की समस्या के अनुसार अलग-अलग एक्सरसाइज और तकनीकों का इस्तेमाल किया जा सकता है। मांसपेशियों को मजबूत करना, जोड़ों की गति बढ़ाना, लचीलापन सुधारना, शरीर का संतुलन बेहतर करना और रोजमर्रा के काम करते समय सही मुद्रा तथा मूवमेंट सिखाना इसी प्रक्रिया का हिस्सा हो सकता है। यानी फिजियोथेरेपी शरीर को उस स्थिति तक पहुंचाने की कोशिश करती है, जहां व्यक्ति केवल दर्द से मुक्त न हो, बल्कि अपनी गतिविधियां सुरक्षित और बेहतर तरीके से कर सके। यही अंतर दर्द खत्म होने और कार्यक्षमता लौटने के बीच है।

चोट के बाद सबसे बड़ी गलती जल्दबाजी

चोट, सर्जरी या लंबे समय तक आराम के बाद शरीर की क्षमता अक्सर पहले जैसी नहीं रहती। कुछ समय तक कम गतिविधि रहने से मांसपेशियां कमजोर हो सकती हैं और शरीर की सहनशीलता घट सकती है। ऐसे में दर्द खत्म होते ही सामान्य जीवन की पूरी रफ्तार में लौटना हर व्यक्ति के लिए सही नहीं होता। शरीर को दोबारा भार उठाने, चलने, झुकने, सीढ़ियां चढ़ने या खेल जैसी गतिविधियों के लिए क्रमशः तैयार करना पड़ सकता है। फिजियोथेरेपिस्ट इसी प्रक्रिया को व्यक्ति की स्थिति के अनुसार आगे बढ़ाते हैं। एक्सरसाइज की कठिनाई, दोहराव और गतिविधियों की तीव्रता धीरे-धीरे बढ़ाई जा सकती है। इसका उद्देश्य शरीर को अचानक अतिरिक्त दबाव से बचाते हुए उसकी क्षमता वापस लाना होता है। इसलिए कई मामलों में फिजियोथेरेपी का वह चरण, जो दर्द खत्म होने के बाद शुरू होता है, उतना ही महत्वपूर्ण हो सकता है जितना शुरुआती उपचार।

लंबे समय तक फिजियोथेरेपी की जरूरत नहीं

यह भी समझना जरूरी है कि दर्द खत्म होने के बाद हर व्यक्ति को लंबे समय तक फिजियोथेरेपी जारी रखने की जरूरत नहीं होती। उपचार की अवधि किसी एक तय समय से निर्धारित नहीं की जा सकती। यह समस्या की प्रकृति, चोट की गंभीरता, व्यक्ति की उम्र और शारीरिक स्थिति, मांसपेशियों की ताकत तथा रिकवरी की गति जैसे कई पहलुओं पर निर्भर करती है। कुछ लोगों को कुछ समय की निगरानी और एक्सरसाइज की जरूरत हो सकती है, जबकि गंभीर चोट या सर्जरी के बाद रिकवरी का दौर लंबा हो सकता है। इसलिए फिजियोथेरेपी कब कम करनी है, कब एक्सरसाइज की आवृत्ति बदलनी है और कब उपचार समाप्त करना है, इसका फैसला व्यक्ति की वास्तविक रिकवरी को देखकर किया जाना चाहिए। दर्द के आधार पर खुद से उपचार बंद करना हमेशा सही तरीका नहीं है।

बदलती जीवनशैली ने बढ़ाई जरूरत

लंबे समय तक कुर्सी पर बैठे रहना, लगातार स्क्रीन के सामने काम करना, शारीरिक गतिविधियों की कमी, गलत पोस्चर और बढ़ती उम्र से जुड़ी शारीरिक कमजोरियां गर्दन, कमर, घुटनों और दूसरे जोड़ों से जुड़ी समस्याओं को बढ़ा सकती हैं। ऐसे में फिजियोथेरेपी की भूमिका सिर्फ चोट लगने के बाद शुरू होने वाले उपचार तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार सही एक्सरसाइज और शारीरिक गतिविधियां मांसपेशियों की ताकत, शरीर के लचीलेपन, संतुलन और गतिशीलता को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं। यही कारण है कि फिजियोथेरेपी को स्वस्थ और सक्रिय जीवनशैली का भी हिस्सा माना जा रहा है। इसका उद्देश्य केवल समस्या आने के बाद शरीर को संभालना नहीं, बल्कि शरीर की कार्यक्षमता को बेहतर बनाए रखना भी हो सकता है। हर साल 8 सितंबर को विश्व फिजियोथेरेपी दिवस मनाया जाता है। डॉ. विक्रम द्विवेदी कहते हैं कि इसका उद्देश्य फिजियोथेरेपी की भूमिका और इसके संभावित लाभों के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाना भी है। भारत में अभी भी बड़ी संख्या में लोग फिजियोथेरेपी को केवल चोट या दर्द के बाद किया जाने वाला उपचार मानते हैं। जबकि इसकी भूमिका पुनर्वास से लेकर शरीर की गतिशीलता और कार्यक्षमता सुधारने तक व्यापक हो सकती है। शरीर का दर्द कम होना राहत की खबर जरूर है, लेकिन हर बार यह इस बात की गारंटी नहीं देता कि शरीर अपनी पूरी क्षमता में लौट चुका है।

असली मंजिल दर्द से आगे है

डॉ. विक्रम द्विवेदी का कहना है कि फिजियोथेरेपी का सफर कई बार दर्द खत्म होने के बाद ही अपने महत्वपूर्ण चरण में पहुंचता है। उस समय लक्ष्य दर्द को हराना नहीं, बल्कि शरीर को उसकी ताकत, गति, संतुलन और सामान्य कार्यक्षमता वापस दिलाना होता है। इसलिए अगर किसी चोट या समस्या के बाद दर्द चला गया है तो सबसे जरूरी सवाल यह नहीं होना चाहिए कि अब फिजियोथेरेपी बंद कर दूं या नहीं। सवाल यह होना चाहिए कि क्या शरीर भी पहले जैसी क्षमता में लौट चुका है? इसका जवाब व्यक्ति की स्थिति और उपचार की प्रगति पर निर्भर करता है। इसलिए फिजियोथेरेपिस्ट की सलाह के अनुसार उपचार और एक्सरसाइज को धीरे-धीरे कम या समाप्त करना अधिक उचित है। दर्द का जाना राहत है, लेकिन पूरी रिकवरी तब है जब शरीर बिना दर्द के साथ-साथ सही ताकत, संतुलन और गति के साथ काम करने लगे।

स्मृति का बल्ला रिकॉर्ड की रफ्तार

भारतीय महिला क्रिकेट में कुछ पारियां केवल स्कोरबोर्ड का हिस्सा नहीं होतीं, वे इतिहास के पन्नों पर दर्ज हो जाती हैं। हांगकांग के खिलाफ महिला एशिया कप में स्मृति मंधाना की 124 रन की पारी भी ऐसी ही पारी रही। 64 गेंदों पर खेली गई इस विस्फोटक पारी ने भारत को 137 रन की बड़ी जीत दिलाकर सेमीफाइनल का टिकट तो पक्का किया ही, साथ ही स्मृति के नाम कई बड़ी उपलब्धियां भी दर्ज कर दीं। स्मृति का बल्ला जब चलता है तो आंकड़े अपने आप पीछे छूटने लगते हैं। हांगकांग के खिलाफ उनकी पारी इसका ताजा उदाहरण बनी। यह केवल एक शतक नहीं था, बल्कि उस बल्लेबाज की निरंतरता और बड़े मंच पर प्रदर्शन करने की क्षमता का प्रदर्शन था, जिसने भारतीय महिला क्रिकेट में सलामी बल्लेबाजी को एक अलग पहचान दी है।

रिकॉर्ड बनना किसी भी खिलाड़ी के करियर का महत्वपूर्ण पड़ाव होता है, लेकिन महानता केवल रिकॉर्ड से तय नहीं होती। असली चुनौती यह होती है कि रिकॉर्ड बनने के बाद प्रदर्शन का स्तर किस तरह कायम रखा जाता है। मिताली राज को पीछे छोड़ने और 18वां अंतरराष्ट्रीय शतक लगाने के बाद स्मृति के सामने अब अपने ही बनाए मानकों को आगे बढ़ाने की चुनौती है। भारतीय क्रिकेट को उनसे केवल रन नहीं, बल्कि बड़े मुकाबलों में निर्णायक पारियों की उम्मीद होगी। एशिया कप के इस मुकाबले ने एक बात साफ कर दी है स्मृति मंधाना का बल्ला केवल रन नहीं बना रहा, वह भारतीय महिला क्रिकेट के रिकॉर्ड बुक का चेहरा भी बदल रहा है। 124 रन की पारी, 10,880 अंतरराष्ट्रीय रन और 18 शतक इस सफर के सिर्फ आंकड़े हैं। इनके पीछे उस बल्लेबाज की कहानी है, जिसने निरंतरता को अपनी सबसे बड़ी ताकत बनाया और हर नई पारी के साथ अपने लिए एक नया मुकाम तैयार किया।

64 गेंद, 124 रन और विरोधी टीम पर दबाव

हांगकांग के खिलाफ स्मृति ने शुरुआत से ही आक्रामक तेवर दिखाए। 64 गेंदों में 124 रन की पारी ने भारतीय पारी को वह रफ्तार दी, जिसकी बदौलत टीम बड़े स्कोर तक पहुंच सकी। उनकी बल्लेबाजी में आक्रामकता के साथ शॉट चयन और पारी को परिस्थितियों के अनुसार आगे बढ़ाने की क्षमता भी दिखाई दी। इस पारी का असर केवल व्यक्तिगत रिकॉर्ड तक सीमित नहीं रहा। भारत ने मुकाबला 137 रन के बड़े अंतर से अपने नाम किया और सेमीफाइनल में प्रवेश किया। यानी स्मृति की व्यक्तिगत चमक टीम की सामूहिक सफलता में भी बदल गई। बड़े टूर्नामेंट में किसी बल्लेबाज की असली परीक्षा यही होती है कि वह व्यक्तिगत उपलब्धि और टीम की जरूरत के बीच संतुलन कैसे बनाता है। हांगकांग के खिलाफ स्मृति ने दोनों मोर्चों पर खुद को सफल साबित किया।

18 शतक, महिला क्रिकेट में नया मुकाम

हांगकांग के खिलाफ शतक स्मृति के अंतरराष्ट्रीय करियर का 18वां शतक रहा। इसके साथ उन्होंने महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सर्वाधिक शतक लगाने वाली बल्लेबाज का मुकाम भी हासिल कर लिया। यह उपलब्धि बताती है कि स्मृति केवल तेजी से रन बनाने वाली बल्लेबाज नहीं हैं, बल्कि बड़ी पारियों को शतकीय मुकाम तक ले जाने की क्षमता भी रखती हैं। आधुनिक क्रिकेट में आक्रामक बल्लेबाजी का दौर है, लेकिन आक्रामकता को बड़ी और प्रभावशाली पारियों में बदलना हर बल्लेबाज के बस की बात नहीं। स्मृति की खासियत यही रही है कि वह शुरुआत में तेजी दिखाने के बाद पारी को लंबा खींचने में भी सक्षम हैं। यही गुण उन्हें भारतीय टीम के शीर्ष क्रम की सबसे महत्वपूर्ण बल्लेबाजों में शामिल करता है।

मिताली राज का रिकॉर्ड भी पीछे

स्मृति की इस पारी का सबसे बड़ा आकर्षण उनका नया रिकॉर्ड रहा। 124 रन की पारी के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में उनके कुल रन 10,880 हो गए। इसके साथ उन्होंने भारतीय महिला क्रिकेट की सबसे बड़ी बल्लेबाजों में शामिल मिताली राज के 10,868 रन के आंकड़े को पीछे छोड़ दिया। इस उपलब्धि का महत्व केवल 12 रन के अंतर में नहीं छिपा है। मिताली राज का नाम भारतीय महिला क्रिकेट की उस पीढ़ी से जुड़ा है जिसने इस खेल को देश में मजबूत आधार दिया। उनके बनाए रिकॉर्ड तक पहुंचना और उसे पीछे छोड़ना स्मृति के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। स्मृति अब महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सभी प्रारूपों को मिलाकर सर्वाधिक रन बनाने वाली बल्लेबाज बन गई हैं। यह आंकड़ा उनकी लंबी अवधि की निरंतरता का प्रमाण है। क्रिकेट में एक बड़ी पारी खेलना मुश्किल है, लेकिन वर्षों तक लगातार रन बनाते रहना उससे भी बड़ी चुनौती है। स्मृति की उपलब्धि इसी निरंतरता की कहानी कहती है।

रैंकिंग में भी बनी मजबूत स्थिति

हांगकांग के खिलाफ शतकीय पारी का असर आईसीसी टी-20 बल्लेबाजी रैंकिंग में भी दिखाई दिया। स्मृति 743 रेटिंग अंक के साथ पांचवें स्थान पर कायम हैं। शीर्ष स्थान पर ऑस्ट्रेलिया की बेथ मूनी 785 अंक के साथ मौजूद हैं। रैंकिंग में पांचवें स्थान पर बने रहना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है, लेकिन स्मृति के लिए यह केवल एक स्थान का मामला नहीं है। लगातार शीर्ष स्तर पर बने रहना यह दिखाता है कि उनका प्रदर्शन किसी एक श्रृंखला या एक टूर्नामेंट तक सीमित नहीं है। टी-20 जैसे प्रारूप में जहां कुछ गेंदों का अंतर बल्लेबाज की पूरी पारी की दिशा बदल सकता है, वहां लंबे समय तक शीर्ष बल्लेबाजों में बने रहना तकनीक, मानसिक मजबूती और परिस्थितियों के अनुरूप खुद को ढालने की क्षमता का प्रमाण है।

स्मृति के कंधों पर भारतीय पारी की शुरुआत

भारतीय महिला टीम के शीर्ष क्रम में स्मृति की भूमिका केवल रन बनाने तक सीमित नहीं है। सलामी बल्लेबाज के तौर पर वह पारी की दिशा तय करती हैं। शुरुआत अच्छी हो तो मध्यक्रम पर दबाव कम होता है और टीम को बड़े स्कोर की नींव मिलती है। इसी वजह से स्मृति की हर बड़ी पारी का असर व्यक्तिगत आंकड़ों से कहीं आगे जाता है। उनकी तेज शुरुआत विपक्षी गेंदबाजों की रणनीति बदल देती है और भारतीय बल्लेबाजी को शुरुआती बढ़त मिलती है। हांगकांग के खिलाफ 124 रन इसी भूमिका का शानदार उदाहरण रहे। उन्होंने न केवल व्यक्तिगत रिकॉर्ड बनाए, बल्कि भारत की जीत की कहानी की सबसे मजबूत नींव भी रखी।

124 रन की पारी ने दिलाई जीत, रैंकिंग में मजबूत हुई जगह

मिताली राज का रिकॉर्ड भी पीछे छूटा

सब्बो मन के एक खेवैया, विष्णु भैया

ढाई साल में महिला शक्ति, किसान समृद्धि और युवा सपनों पर छत्तीसगढ़ सरकार का फोकस

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार के ढाई साल से अधिक के कार्यकाल में महिला सशक्तिकरण, किसान कल्याण और युवाओं के भविष्य को विकास की प्राथमिकताओं में प्रमुख स्थान मिला है। इन तीनों क्षेत्रों में सरकार का जोर केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, अवसर और स्थायी आय के रास्ते तैयार करने पर भी दिखाई देता है। महिलाओं की आर्थिक ताकत, किसानों की बढ़ती आय और युवाओं के लिए शिक्षा व रोजगार के अवसर— इन तीनों को मजबूत करना किसी भी राज्य की अर्थव्यवस्था और सामाजिक प्रगति का आधार है। आने वाले समय में इन योजनाओं की सफलता का सबसे बड़ा पैमाना यही होगा कि इनका असर कितनी मजबूती से परिवारों की आय, जीवन स्तर और भविष्य की संभावनाओं में दिखाई देता है।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की पहल

महतारी वंदन योजना ने प्रदेश की महिलाओं को सीधे आर्थिक संबल देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। करीब 68 लाख पात्र महिलाओं को अब तक 20 हजार करोड़ रुपए से अधिक की राशि सीधे खातों में दी जा चुकी है। शशि पटेल, दुर्गा साहू और पूजा साहू का कहना है कि महतारी वंदन योजना की वजह से उन्हें अब छोटे-मोटे काम और घर की जरुरतों के लिए खर्च करने में कोई दिक्कत नहीं होती है। दूसरी ओर, महिला स्व-सहायता समूह ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी का मजबूत आधार बन रहे हैं। प्रदेश में 2 लाख 42 हजार से अधिक समूहों से करीब 30 लाख महिलाएं जुड़ी हैं। लखपति दीदी अभियान के जरिए 13.85 लाख महिलाओं को लखपति दीदी बनाने की उपलब्धि हासिल की गई है। ड्रोन दीदियां कृषि क्षेत्र में तकनीक का इस्तेमाल कर आय के नए अवसर पैदा कर रही हैं। महिलाओं को संपत्ति के मामले में प्रोत्साहन देने के लिए पंजीयन शुल्क में 50 प्रतिशत और स्टाम्प शुल्क में एक प्रतिशत की रियायत भी दी गई है।

अन्नदाता के श्रम को सम्मान

किसानों के लिए धान खरीदी सरकार की प्रमुख प्राथमिकताओं में रही है। 3100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान खरीदी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने का प्रयास किया है। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में 25.24 लाख किसानों से 141.04 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा गया और समर्थन मूल्य तथा कृषक उन्नति योजना के माध्यम से करीब 43,723 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया। श्रमिक मजदूर अंजलि सिन्हा का कहना है कि सरकार की योजनाओं की बदौलत उनका जीवन संवर गया है।

युवाओं के लिए शिक्षा से रोजगार तक

युवाओं के भविष्य को मजबूत करने के लिए उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के अवसर बढ़ाने पर जोर दिया गया है। प्रदेश में 15 मेडिकल कॉलेज संचालित हैं। दिल्ली में यूथ हॉस्टल और प्रदेश में 34 नालंदा परिसरों की योजना विद्यार्थियों को बेहतर अध्ययन सुविधाएं देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। दूसरी ओर, नई औद्योगिक विकास नीति के तहत 8 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश प्रस्ताव मिलने का दावा है, जिनसे 1.72 लाख से अधिक संभावित रोजगार के अवसर बनने की उम्मीद है। यानी प्रयास यह है कि प्रदेश का युवा केवल नौकरी तलाशने वाला नहीं, बल्कि नए अवसरों का सहभागी और रोजगार सृजक भी बने।

दुर्गा साहू, लाभार्थी

शशि पटेल, लाभार्थी

अंजली सिन्हा, लाभार्थी

पूजा साहू, लाभार्थी

छत्तीसगढ़ में 98 फीसदी बोनी पूरी

किसानों को 12.48 लाख टन खाद और 4.58 लाख क्विंटल बीज बांटे गए

छत्तीसगढ़ में खरीफ सीजन की खेती-किसानी अब अंतिम चरण की ओर बढ़ रही है। मानसून के साथ शुरू हुई बोनी का काम तेजी से पूरा हो रहा है। 1 सितंबर की स्थिति में राज्य में 47.63 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में विभिन्न फसलों की बोनी पूरी हो चुकी है। यह निर्धारित 48.69 लाख हेक्टेयर के लक्ष्य का 98 प्रतिशत है। किसानों ने धान के साथ मक्का, कोदो, कुटकी, अरहर, मूंग, मूंगफली और रामतिल जैसी फसलों की बोनी की है। कृषि विभाग के अनुसार किसानों को समय पर खाद और प्रमाणित बीज उपलब्ध कराने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। खरीफ सीजन के लिए 15.55 लाख मीट्रिक टन उर्वरक वितरण का लक्ष्य तय किया गया था। इसके मुकाबले सहकारी और निजी क्षेत्र में 16.87 लाख मीट्रिक टन उर्वरक का भंडारण किया गया है। इसमें से अब तक 12.48 लाख मीट्रिक टन खाद किसानों को वितरित की जा चुकी है, जो निर्धारित लक्ष्य का करीब 80 प्रतिशत है।

4.58 लाख क्विंटल बीज किसानों तक पहुंचा

खरीफ सीजन 2026 के लिए बीज निगम ने 4.95 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज वितरण का लक्ष्य रखा है। इसके विरुद्ध 4.80 लाख क्विंटल बीज का भंडारण किया गया है। अब तक 4.58 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज किसानों को वितरित किया जा चुका है। यह निर्धारित मांग का करीब 93 प्रतिशत है। इससे खरीफ की प्रमुख फसलों के लिए किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध कराने में मदद मिली है।

सामान्य से ज्यादा बारिश से खेतों को फायदा

1 सितंबर तक प्रदेश में 898.9 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। पिछले 10 वर्षों की समान अवधि की औसत वर्षा 877.2 मिलीमीटर रही है। इस तरह इस अवधि में औसत से 21.7 मिलीमीटर अधिक बारिश दर्ज की गई है। पर्याप्त वर्षा से खरीफ फसलों की बढ़वार और खेतों में नमी की स्थिति को अनुकूल आधार मिला है।

किसानों को 7834.96 करोड़ का कृषि ऋण

कृषि कार्यों के लिए किसानों को आर्थिक सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से अल्पकालीन कृषि ऋण दिया जा रहा है। 31 अगस्त तक प्रदेश में 7834.96 करोड़ रुपये का ऋण वितरित किया जा चुका है। चालू खरीफ सीजन में किसानों को कुल 8800 करोड़ रुपये का कृषि ऋण देने का लक्ष्य रखा गया है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अधिकारियों को किसानों की मांग के अनुसार खाद और प्रमाणित बीज सहजता से उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। साथ ही सोसायटियों में पर्याप्त भंडारण बनाए रखने, वितरण व्यवस्था की लगातार निगरानी करने और किसी भी स्तर पर लापरवाही मिलने पर कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं। कृषि विकास एवं किसान कल्याण मंत्री रामविचार नेताम के मार्गदर्शन में विभागीय अधिकारी खाद, बीज और कृषि ऋण की व्यवस्था पर लगातार नजर रख रहे हैं।

बदलता सिनेमा और परदे का सच

लोकतंत्र में सिनेमा को केवल मनोरंजन समझना उसके प्रभाव को कम करके आंकना होगा। पर्दे पर चलती तस्वीरें जब लाखों लोगों की साझा भावनाओं का हिस्सा बनती हैं, तब वे सिर्फ कहानी नहीं कहतीं, समाज की सोच, स्मृति और राजनीतिक नजरिये को भी प्रभावित करती हैं।

सिनेमा की यही ताकत उसे सत्ता, सरकारों और विचारधाराओं के लिए हमेशा आकर्षण का केंद्र बनाती रही है। यहीं से जन्म होता है उस सिनेमा का, जिसे हम प्रोपेगेंडा कहते हैं। ऐसा सिनेमा जिसका मकसद दर्शक के सामने सवालों की पूरी दुनिया खोलना नहीं, बल्कि उसे एक खास निष्कर्ष तक पहुंचाना होता है। प्रोपेगेंडा की सबसे दिलचस्प खूबी यह है कि वह हमेशा झूठ का सहारा नहीं लेता। कई बार वह सच का चयन करता है। कुछ घटनाओं को रोशन करता है, कुछ चेहरों को नायक बनाता है और कुछ प्रसंगों को अंधेरे में छोड़ देता है। नतीजा यह होता है कि आधा सच ही पूरा सच दिखाई देने लगता है। सिनेमा इसके लिए बेहद ताकतवर माध्यम है। संगीत, कैमरा, संवाद, युद्ध के दृश्य, तिरंगा, सैनिक, बलिदान, खलनायक और नायक ये सभी मिलकर ऐसी भावनात्मक दुनिया बनाते हैं, जहां दर्शक कई बार सोचने से पहले महसूस करने लगता है। यही वह जगह है जहां भावना धीरे-धीरे प्रमाण का स्थान लेने लगती है।

अमेरिका ने चुना ज्यादा सूक्ष्म रास्ता

अमेरिका में तरीका कुछ अलग था। वहां सिनेमा को सीधे प्रोपेगेंडा कहने के बजाय राष्ट्रीय मूल्यों और लोकतांत्रिक आदर्शों के नैरेटिव के रूप में इस्तेमाल किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान स्वतंत्रता और लोकतंत्र की रक्षा का संदेश फिल्मों में दिखाई दिया। बाद में शीत युद्ध के दौर में यही माध्यम साम्यवाद-विरोधी भावनाओं को मजबूत करने लगा। दर्शक कहानी देख रहा था, लेकिन कहानी के साथ उसे यह भी बताया जा रहा था कि सही और गलत की सीमा कहां है। बाद में वियतनाम युद्ध के दौरान टेलीविजन ने युद्ध की ऐसी तस्वीरें घर-घर पहुंचाईं, जो सरकारी नैरेटिव से कहीं अधिक कच्ची और भयावह थीं। यहीं एक महत्वपूर्ण सबक सामने आया—जब वास्तविकता और निर्मित कथा आमने-सामने आती हैं, तो पर्दे की चमक हमेशा जीत नहीं पाती।

भारत में सिनेमा: राष्ट्र निर्माण से राष्ट्रवाद तक

भारत में सिनेमा का रिश्ता सत्ता और समाज से शुरू से ही जटिल रहा है। आजादी के बाद एक नए राष्ट्र को केवल राजनीतिक संविधान की नहीं, बल्कि साझा भावनात्मक पहचान की भी जरूरत थी। इसी दौर में सरकारी संस्थाओं के जरिए विकास, वैज्ञानिक सोच, लोकतंत्र, राष्ट्रीय एकता और नागरिक जिम्मेदारी से जुड़ी फिल्में दिखाई गईं। सिनेमाघरों में मुख्य फिल्म से पहले आने वाली लघु फिल्मों ने एक तरह से राष्ट्र निर्माण का दृश्यात्मक पाठ पढ़ाया। यहां फर्क महत्वपूर्ण था। उद्देश्य नागरिकों को नए देश की कहानी से जोड़ना था, न कि जरूरी तौर पर किसी राजनीतिक विरोधी को खलनायक बनाना। यानी सिनेमा का इस्तेमाल था, लेकिन उसका तेवर अपेक्षाकृत शिक्षात्मक था।

1962 के बाद बदला भावनात्मक स्वर

भारत-चीन युद्ध की पराजय ने देश के आत्मविश्वास को गहरा झटका दिया। इस दौर में बनी फिल्मों ने सैनिकों के साहस और बलिदान को सामने रखकर राष्ट्रीय मनोबल को संभालने की कोशिश की। समय के साथ युद्ध और राष्ट्रवाद भारतीय लोकप्रिय सिनेमा के बड़े विषय बनते गए। 1990 के दशक के बाद उदारीकरण और बढ़ते बाजार ने इस समीकरण को नया रूप दिया। बॉर्डर जैसी फिल्मों ने युद्ध, सैनिक, परिवार, बलिदान और देशभक्ति को बड़े भावनात्मक स्वर में बदल दिया। दर्शक के लिए राष्ट्रवाद अब सिर्फ विचार नहीं रहा, वह एक सिनेमाई अनुभव बन गया।

राष्ट्रवाद का नया सिनेमाई संस्करण

पिछले एक दशक में राष्ट्रवाद की सिनेमाई भाषा और अधिक आक्रामक हुई। उरी-द सर्जिकल स्ट्राइक जैसी फिल्मों में सैन्य कार्रवाई को रोमांच, गर्व और प्रतिशोध के भाव से जोड़ा गया। यहां एक बदलाव साफ दिखाई देता है। पहले देशभक्ति का मतलब सैनिक का बलिदान था, अब कई फिल्मों में देशभक्ति का मतलब एक खास राजनीतिक या सैन्य कार्रवाई के समर्थन से जुड़ने लगा। समस्या देशभक्ति में नहीं है। समस्या तब पैदा होती है जब देशभक्ति को सवाल पूछने के खिलाफ खड़ा कर दिया जाए। किसी सैनिक का सम्मान करना और किसी नीति पर सवाल उठाना एक-दूसरे के विरोधी नहीं हो सकते। लोकतंत्र की खूबसूरती इसी दोहरी क्षमता में है कि नागरिक देश से प्रेम भी करे और सत्ता से सवाल भी पूछे।

ओटीटी ने बदला प्रोपेगेंडा का चेहरा

सिनेमा के बदलते स्वरूप में ओटीटी सबसे बड़ा परिवर्तन लेकर आया। अब दर्शक को सिनेमाघर तक जाने की जरूरत नहीं। कहानी मोबाइल की स्क्रीन पर है और कंटेंट चौबीसों घंटे उपलब्ध है। इसके साथ एक नया खतरा भी आया एल्गोरिदम। दर्शक जिस तरह की सामग्री देखता है, प्लेटफॉर्म उसी तरह की और सामग्री सामने लाता है। धीरे-धीरे व्यक्ति एक ऐसे डिजिटल कमरे में पहुंच सकता है जहां उसे वही विचार बार-बार दिखाई देते हैं, जिनसे वह पहले ही सहमत है। यहां प्रोपेगेंडा का रूप भी बदल गया है। वह अब हमेशा भाषण नहीं देता। वह आपकी पसंद को समझता है और फिर आपकी पसंद की दुनिया को लगातार बड़ा करता जाता है।

दुनिया ने बहुत पहले पहचान ली थी सिनेमा की ताकत

बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में ही सरकारों ने समझ लिया था कि सिनेमा जनता की राय प्रभावित करने का बेहद प्रभावी माध्यम है। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फिल्मों और न्यूजरील्स के जरिए सैनिकों के बलिदान को गौरव, युद्ध को राष्ट्रीय कर्तव्य और विरोधी पक्ष को दुश्मन के रूप में पेश किया गया। उस समय सूचना के साधन सीमित थे। इसलिए पर्दे पर दिखाई जाने वाली तस्वीर का प्रभाव कहीं अधिक गहरा था। सिनेमा ने भाषण की जगह दृश्य और तर्क की जगह अनुभव को खड़ा कर दिया। सोवियत संघ में सिनेमा को वैचारिक निर्माण के औजार के रूप में इस्तेमाल किया गया। क्रांति, वर्ग संघर्ष और समाजवादी विचारों को फिल्मों के जरिए जनमानस तक पहुंचाया गया। वहां प्रोपेगेंडा अपेक्षाकृत स्पष्ट था। नाजी जर्मनी ने इसी शक्ति को और भयावह रूप दिया। वहां सिनेमा सत्ता के प्रचार तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। नेता का व्यक्तित्व मिथक में बदला गया, सामूहिक अनुशासन को गौरव का रूप दिया गया और असहमति को राष्ट्रविरोध से जोड़ने की कोशिश हुई। तकनीक शानदार थी, लेकिन उसका इस्तेमाल लोकतांत्रिक चेतना के खिलाफ हुआ।

टीवी इंडस्ट्री की पॉपुलर एक्ट्रेस आकांक्षा चमोला इन दिनों अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर इंटरनेट पर छाई हुई है। मशहूर टीवी एक्ट्रेस आकांक्षा चमोला ने कहा है कि वो बाइसेक्शुअल है। इसके साथ ही उन्होंने ये भी कहा कि गौरव खन्ना को उनकी बाइसेक्सुअलिटी काफी हॉट लगती थी, उन्होंने शादी से पहले गौरव को बताया था और उन्हें इससे कोई दिक्कत नहीं थी। उन्होंने कहा, "मैंने शादी से पहले ही साफ बता दिया था कि मैं बाइसेक्शुअल हूं। मेरे पति ने भी इसे स्वीकार किया था, क्योंकि उन्हें यह बात काफी आकर्षक लगती थी। पुरुषों को यह बात बहुत पसंद आती है। मुझे समझ नहीं आता कि लोग इसे स्वीकार क्यों नहीं कर पाते। ज्यादातर पुरुषों को यह काफी आकर्षक लगता है। आकांक्षा चमोला ने अपने करियर की शुरुआत 'स्वरागिनी' शो से की, जिसमें उनके साथ हेली शाह और तेजस्वी प्रकाश भी थीं। इसके बाद, वो साल 2017 में 'भूतू' और 2022 में 'कैन यू सी मी' जैसे टेलीविजन शो में नजर आईं। टीवी शो 'कैसे मुझे तुम मिल गए' के अलावा 'रिवाइंड वाला लव' और 'माफिया किंग' जैसी कई वेब सीरीज में भी आकांक्षा ने काम किया है। अकांक्षा चमोला ने 24 साल की उम्र में एक्टर गौरव खन्ना के साथ शादी की थी। रियलिटी शो लॉकअप में आकांक्षा चमोला ने ऑफिशियली बताया कि वो और गौरव तलाक ले रहे हैं और 1 साल से अलग रह रहे हैं। उन्होंने ये भी कहा कि दोनों का म्यूचुअल डिसीजन है।

SAVE WATER
SAVE LIFE
WALK FOR
WATER
WATER IS OUR RELIGION
जनता के गोठ
जहां खबर नहीं, असर होता है

छत्तीसगढ़ संवाद RO No. : 14007/ 195